Rs.5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

September' 2008



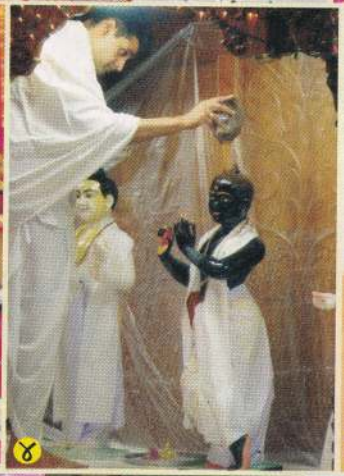
શ્રીકૃષ્ણ જન્માષ્ટમી

પ્રકાશક : શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ • Publisher : Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad.















१. बोपल मंदिर में भव्य झूले का दर्शन ।
२. कांकरिया मंदिर में महारुद्र यज्ञ की पूर्णाहुति करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।
३. लेस्टर मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।
४. फ्लोरिडा (अमेरिका) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अभिषेक करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।
५. दिल्ली मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट आरती दर्शन ।
६. अहमदाबाद मंदिर में श्रीमद् भागवत कथा का रसपान कराते हुए वक्ता शा. स्वा. धर्मकिशोरदासजी ।
७. महेसाणा में भव्य देदीयमान शिखरी महामंदिर की तस्वीर ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
स.गु. स्वामी नारायणस्वरुपदासजी (महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - 2 अंक : 17 सितम्बर-2008

अ नु क्र म णि का

१	अस्मदीयम	२
२	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३	आनन्द की झडी : त्रोह त्रोह करके बह गये	४
४	हे युवानो !!!	५
५	जीवन जीने का ढंग	६
६	जलझीलणी	८
७	दयालु प्रभु की दया	९
८	कपटीने कपट किया - ब्रह्माभाव की वाणी	१०
९	श्री स्वामिनारायण मंदिर (इटास्का) शिकागो USA का दशाब्दिक पाटोत्सव	११
१०	पार्षद केसर भगत	१२
११	सत्संग सुरभि	१४
१२	सत्संग बालवाटिका	१७
१३	भक्तिसुधा	१९
१४	प्रश्न पेटी	२१
१५	सत्संग समाचार	२२

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अस्मदीयम्
Editorial



सत्संग में साधनदशावाले सत्संगी को भगवान की प्रत्यक्ष चमत्कारिक अनुभूति हो तो उनके उत्साह में खूब वृद्धि होती है। इससे भगवान में प्रीति अधिक होने लगती है। इसके साथ भगवान में निष्ठा दृढ़ हो जाती है। भगवान की इच्छा से सत्संग में छोटे-बड़े चमत्कार होते रहते हैं। इसमें भी यदि भक्त का ध्यान भगवान में एक निष्ठा से हो तो नित्य चमत्कार दिखाई देगा। इसके अलांवा श्रीहरिने कहा है कि इस जीवन में ही भगवान में प्रेम हो जाय तो इससे बड़ा चमत्कार कोई नहीं है।

अगस्त ८, ९, १० ता. को केनेडा देश के टोरेन्टो शहर में श्री नरनारायणदेव देश के मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। केनेडा-अमेरिका के हरि भक्तों के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ। केनेडा में बहुत वर्षो की प्रतीक्षा के बाद मंदिर के आयोजन के समय मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव में हरिभक्तों में खूब उत्साह था। ९ अगस्त को भगवान की मूर्तियों की नगरयात्रा (शोभायात्रा) में सतत बरसात के कारण विघ्न दिखाई देता था। भगवान के लिये तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के लिये वोटर प्रूफ फ्लोट तैयार किया गया था। लेकिन मेघराजा तो प्रसन्न होकर ज्यों ज्यों शोभायात्रा (नगरयात्रा) का समय नजदीक आता गया त्यौं-त्यौं बरसात की गति को बढाते गये। ऐसे समय में उपस्थित हरिभक्तों के अंतःकरण से एक अलौकिक भव्य भाव प्रगट हो रहा था। कोई अव्यक्तरूप से प्रसन्न हो रहा था। कोई भगवान से प्रार्थना कर रहा था, जिस की जैसी भक्ति थी, जिसके जैसे विचार थे वह सब उनके मुख विम्ब से भासित हो रहे थे।

"खरानी खबर तो टाणेज थाय" (सही की पहचान समय पर होती है) लेकिन युवान तो चालू बरसात में खुले मस्तक नगरयात्रा में चल रहे थे। कुछ लोग बरसात की तैयारी करके घर से निकले थे। लेकिन नगरयात्रा प्रस्थान स्थल पर प.पू. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय मेघराजाने एकदम रूप बदल दिआ, सारा आकाश निर्मल हो गया। हरिभक्तो जयजयकार की नाद से आकाश को भर दिया। भविष्यवाणी करनेवाले विचारते ही रह गये। डेढ़ घंटे की नगर यात्रा पूर्ण करके भक्तलोग आनंद का अनुभव किये। उसी समय एक चमत्कार और हुआ। जब पूज्य महाराजश्री मूर्तियों की प्रतिष्ठा कर लिये तुरंत ही पुनः मेघराजा प्रसन्न होकर बरसने लगे। सभी को आश्चर्य हुआ कि इतने थोड़े समय में इतना परिवर्तन हरि इच्छा के बिना सम्भव नहीं है। जैसे श्रीहरि कहते है कि हम सत्संग में प्रत्यक्ष है, यह उसी का प्रत्यक्ष उदाहरण है। टोरन्टो शहर में चमत्कारिक घटना (प्रसंग) हुई यह सर्वोपरि श्रीजी महाराज की कृपा से तथा प.पू. धर्मवंशी के संकल्प से संभव हुआ। अन्यत्र चमत्कार दिखाने के लिये नाना विध उपाय करनी पड़ती है। जब कि सत्संग में तो यह आमबात है। इसीलिये श्रीहरि ने कहा है जिसे सत्संग में प्रीति हो उन्हें ही प्रतीति होगी उन्ही का मोक्ष होगा, अन्य तो भटकते ही रह जायेंगे।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *साधु नारायणस्वरूपदास का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

अगस्त -२००८

१३. सुरोही बंगलोज में पदार्पण नवा नरोडा ।

१५. श्री सुरेशकुमार रमणीकलाल सोनी के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।

१७.. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया तथा श्री जिगर दीपकभाई पटेल के यहाँ पदार्पण कांक रिया ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा कथा की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

२० से २१ जयपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

२४. दर्शन फोरेक्ष प्रा.ली. में पदार्पण सी.जी. रोड.

श्री जसुभाई ज्वेलर्स में पदार्पण सी.जी. रोड

सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली जन्माष्टमी के उत्सव प्रसंग पर पदार्पण

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया यज्ञकी पूर्णाहुति के प्रसंग पर पदार्पण ।

२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

२७. संत महादीक्षा विधि स्वहाथों से संपन्न किये ।

२८ से ११ सितम्बर तक विदेश धर्मयात्रा - अमेरिका, चेरिहील श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव तथा कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में पदार्पण ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्रागट्योत्सव

आश्विन शुक्ल-१० विजया दशमी ता. ९-१०-०८ गुरुवार के शुभ दिन श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का प्रागट्योत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में अहमदाबाद मंदिर के विशाल प्रांगण में धूमधाम के साथ संत-हरिभक्तों द्वारा मनाया जायेगा । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मूली तथा कच्छ (भुज) देश के सभी संत-हरिभक्तों को पधारने हेतु हमारा भावभरा निमंत्रण है ।

- महंत स्वामी

आनन्द की झड़ी

त्रोह त्रोह करके बह गये

- शा. हरिजीवनदास (हिंमतनगर महंत)

श्रीहरि सुरत शहर में बिराजमान थे । थोड़े आनंद में प्रभु ने सुराखाचर से कहा कि सुराखाचर कोई कथा सुनाईये न ?

सुराखाचर कथा करने लगे । महाराज ! हम अपने बाप दादा की कथा सुनाते हैं । इस समय सुराखाचर वक्ता एवं महाराज श्रोता हैं । हमारे बाप दादा गाँव लूटने गये थे । वहाँ से खूब धन लूटकर ले आये । उसी समय पकड़ने के लिये फौज आगई ।

आगे-आगे बाप दादा पीछे-पीछे फौज । भागते भागते सूर्यास्त हो गया । साबरमती नदी उस समय दोनों किनारे से बह रही थी । इन लोगों को उस पार जाना हैं । अब यह होने लगा कि पहले घोड़े को नदी में कौन कुदाता है । इस तरह विचार करते रहे तो फौज आजायेगी । सभी मिलकर आडाकाठी को नदी में घुसने को कहा । आडाकाठी घोड़े को चाबुक लगाकर भीतर पानी में घुस गये अब पानी इतना अधिक था कि त्रोह त्रोह करके चिल्लाने लगे । अन्य को भी ऐसा हुआ कि घोड़े के बराबर पानी है इसलिये उसने भी घोड़े को पानी में कुदाया । उसने भी त्रोह त्रोह की आवाज लगाई । अन्य लोग भी यही समझे कि घोड़े के पार करने के योग्य पानी है इसलिये सभी कूद पड़े । इतना अधिक पानी था कि सभी त्रोह-त्रोह करते पानी में बह गये ।

महाराज यह सुनकर खूब हंसे और कहने लगे कि देखो यह अपने बाप दादा की बात सुनाता है । और गाली भी देता है । सुराखाचर भी हंसने लगे । जब श्रीहरि नाराज होते तो हंसने की बात सुनने का अच्छा बाहाना होता । एकबार महाराज नाराज हो गये । भोजन भी नहीं कर रहे थे । एकएक करके कितने भक्त आते, चरण स्पर्श करते, सभी के पास आकर बैठते लेकिन महाराज को कोई बुला सकता नहीं था । सभी लोग सभा में मौन बैठे थे । जैसे कोई शोक सभा हो । यह किसी को ख्याल नहीं आ रहा था क्या करें । उसी समय सुराखाचर आये । महाराज के चरण छूकर सभा मैं बैठ गये । महाराज की मौन मुद्रा देखकर समझ गये । अब बापू एकवात कहना प्रारम्भ कर दिये ।

एक चारण की झोपड़ी थी । उसी में एक नागा बाबा रहता था । चारण तथा चारण की पत्नी दोनो जब बाबा के पास जाते तो कुछ भेटं लेकर जाते । लेकिन एक बार ऐसा हुआ कि चारण की स्त्री बाबा के दर्शनार्थ खाली हाथ गई । चारण की पत्नी को दूर से देखकर बाबाने कहा आज खाली हाथ दर्शन करने आई है । इसलिये वह अपना मुंह उससे फेर लिया । चारणी स्त्रीने कहा अरे बाबड़िया । ऐसा क्यों करता है ? सन्मुख का दर्शन करने दे । बाबा कटाक्ष में बोला अरे तूं कुछ भेंट ले नहीं आई है और सन्मुख दर्शन मांगती है । सन्मुख दर्शनतो नहीं होगा । ऐसा कहकर बाबा झुंक गया । इस तरह की बात करके सुराखाचर महाराज को खूब हंसाये ।

हे युवानो !!!

- कोठारी स्वामी रामानुजदासजी

तो हे युवानो .....

इस प्रकार सत्संग में कुशल एक सक्रिय सत्संगी चाहे तो दूसरे अनेक लोगों में आध्यात्मिकता की ज्योति फैला सकता है। कारण यह कि आज सम्पूर्ण विश्व में सभी को प्रकाशित होकर जीने की आवश्यकता है। किसी कवि ने लिखा है कि अज्ञान रुपी अंधकार से जाग कर सत्संग के कार्य में लग जाना चाहिये।

उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोअत है।

उपरोक्त पंक्ति में जीवात्मा को जागने की बात कही गई है। जो रात्रिबीत जाने पर भी सोता रहता है वह कुछ खोता है तथा जो जागता है वह कुछ प्राप्त करता है। इस सामान्य अर्थ को श्रीजी महाराजने ग.प्र. ९० वे वचनामृत में समझाते हैं कि जगत के जीवों की बुद्धि रात्रि में अंधकारमय बनजाती है, जिससे वह भगवान की भजन नहीं करपाता है। तथा जो भक्त है वे सतत जागृत होकर भगवान की भजन करते रहते हैं। जगत के विषयों में मोहांध होकर मृगमरीचिका की तरह भटकने वाले जीवों को परमात्मा सावधान करते है जिससे जीव भगवान की मूर्ति को पहचान सके। श्रीजी महाराजने स्व हाथों से लिखी शिक्षापत्री में सभी के लिये नियम तथा आज्ञा पालन का निर्देश किया है जिससे परमात्मा का धाम सरलता से प्राप्त किया जा सके।

युवानो ! अपने जीवन का लक्ष्य है भगवान के धाम की प्राप्ति: इस लिये आज से ही कटिबद्ध होकर भगवान की बताई नीति-नियम पर चलना चाहिये। श्रीजी महाराज के शब्दो में कहें तो "शूरा सावधान रहजो" ध्येय प्राप्ति के लिये अडिग रहना, तभी लक्ष्य सरलता से प्राप्त हो सकता है। अपने जीवन का लक्ष्य परमात्मा का प्रत्यक्ष दर्शन तथा धाम की प्राप्ति है। जीवन में चलते चलते हमें एक ही साथ अनेकदिशाओं में जाने की इच्छा होती है। इस में कारण यह है कि अपने इष्टदेव में पक्की निष्ठा नहीं है। अज्ञान तथा आलस्य के कारण जीवात्मा अपने लक्ष्य को भूल गया हैं। हमें यह ख्याल रखना चाहिये कि अंतिम लक्ष्य तक पहुंचना है, इसके लिये संत समागम, सत्शास्त्र पठन, सत्संग के नियमों का यथार्थ ज्ञान तथा माहात्म्य के साथ भक्ति करना जरुरी है। संत समागम के विना दोष का ज्ञान नहीं होता। कारण यह कि विषय रुपी रोग के लिये संत वैद्य हैं। आत्मा-परमात्मा का ज्ञान सत्शास्त्रों के ज्ञान विना संभव नहीं है। इसके लिये सत्संग की भी परमावश्यकता है। हे युवानों। यह सुअवसर फिर नहीं मिलेगा - इसलिये हरि की भजन का योग विचार कर सहभाग्य को जगाना चाहिये। योग्य मार्ग पर लाकर, सत्संग करके परमात्मा को प्राप्त करना चाहिये। आज युवान पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करके भौतिकता के पीछे दौड़ने लगा है, यदि यही दौड़ आध्यात्मिकता के पीछे लगा दे तो जीव ध्यान-भक्ति के माध्यम से तीव्र वासना को नष्ट करके भगवान का प्रत्यक्ष दर्शन कर सकता है। सत्संग में तथा समाज में यदि सफलता की चाहना हो तो जीवन में अनेक संकटो का सामना करना होगा।

भगवान के भक्तों का लक्ष्य परमात्मा का मिलन होना आवश्यक है, इसके लिये हृदय शुद्धि तथा संकल्प शुद्धि जरुरी है। जब जीव भगवान में आत्म समर्पण करता है तथा उन्हीं का मात्र दृढता से आश्रय ग्रहण करता है तो भगवान उस जीव को बड़ी सरलता से अपना लेते है। युवान जिस प्रकार अपनी शक्ति को अलग-अलग दिशाओं में अपव्यय कर देता है, उसी प्रकार उस शक्ति को एकत्रित करके एक जगह अपने मन को दृढ करके भगवतसमर्पित होकर यदि उसी शक्ति को परमात्मा में लगा दे तो उसका कल्याण तो

अनुसंधान पृष्ठ ७ पर....



जीवन जीने का ढंग

- साधु धर्मकिशोरदास गुरु स्वामी नारायणस्वरुपदासजी

जन्म-मरण इन दोनों के बीच कें अस्तित्व को अलंकृत करने का नाम ही जीवन है। इस जगत में दो प्रकार के मानव दिखाई देते हैं। एक जहाँ - जहाँ जाता है वहाँ वहाँ शांति फैल जाती है। दूसरा जहाँ-जहाँ जाता है वहाँ वहाँ अशांति फैल जाती है। इस पर हमें विचार करना है।

मावन का जीवन दर्पण के समान होना चाहिये। दर्पण सामने आनेवालों का स्वागत करता है। लेकिन अपने भीतर किसी का संग्रह नहीं करता। इसी तरह मनुष्य को चाहिये कि आवश्यकतानुसार सभी के साथ सम्बन्ध रखे लेकिन बन्धन कारक संसर्ग कभी न करे। जीवन में अंतिम सफलता का साधन यही है। प्राप्त करना, देना, तथा अंतर से छोड़ देना।

भगवान ने अपनी शरीर अर्थात् मानव शरीर देते समय यह निर्देश किया कि देह का उपयोग कैसे करेंगे तो उसके लिये गीता, भागवत, रामायण, शिक्षापत्री, उपनिषद जैसे शास्त्रों को दिया। इन्हीं शास्त्रों के अनुसार जीवन की दैनिक चर्या कीजाय तो भगवान के पास अंतिम समय में बड़ी सरलता से पहुंचा जा सकता है। लेकिन जीवन जब अपने मन के वशीभूत होकर व्यसन में अभिलिप्त हो जाता है तब दुर्गंध वाली गटर की नाली में जाकर फंस जाता है।

भगवान स्वामिनारायण ने ग.प्र. के १९ वें वचनामृतमें कहा है कि जो पंच विषय को समझे विना, सार-असार का विभाग किये विना उपभोग करेंगे तो नारद सनका दिक जैसे होगे तो भी उनकी बुद्धि नष्ट हो जायेगी और भगवान की विस्मृति हो जायेगी।

आज मनुष्य जन्म लेता है, रोते-रोते जीवन पावन करता है, फरियाद करते - करते मर जाता है। मात्र निराशा जीवन में हाथ लगती है। इसका कारण मात्र अकारण क्रोध करना ! यह क्रोध दुष्मनो द्वारा उत्पन्न की जाती है, जिससे जीवन की शांति खत्म हो जाती है।

आज मानव ऊँते-ऊँचे मकान बना रहा है लेकिन उनके जीवन के शैली तो एक दमनीचेकी है। उनकी फ्रीज खोलें तो शराब की बोतल तथा सफेद आलू निकलेगा।

एक दुकानदार को एक व्यक्ति के पास से हजारो रुपये लेना बाकी था। इसलिये दुकानदारने धमकी दी कि हमारा पैसा दे दो। सामने वाले व्यक्तिने पत्नी के फोटो के साथ पत्र लिखकर भेंजा कि "इसके कारण तुम्हारा पैसा देने में असमर्थ हूँ। खाने के लिये घरमें अनाज नहीं है। बालको को पढाने के लिये फीस नहीं है। लोग बाह्य आडंबर में मशगुल हैं। इससे सारे घर में अशांति के बादल घिरे रहते हैं। बारंबार मुश्कीलका सामना करना पड़ता है। इसलिये सामान्य (सादगी) के जीवन को श्रृंगार समझकर फैशनबाजी वाले रजोगुणी जीवन से बचना चाहिये। आज का मानव घर भी नही छोड़ सकता। तथा घर में शांति से रहभी नहीं सकता।

जीवन में सभी तकलीफ जीभ की कटूता पर निर्भर करती है। इसलिये बालकों को बोलना सीखना चाहिये, तथा बड़ो को मौन रहना सीखना चाहिये। मनुष्य जब फिसलता है तो उसी का पैर टूटता है। लेकिन जीभ जब फिसलती है तो कितनों के घर टूट जाते हैं।

एक भाई किसी से पूछा कि आप का बेटा आपका पैर दबाता है ? नहीं, वह गला दबाने के लिये तैयार है। यह कुसंस्कार का परिणाम है। इसीलिये कहा है कि यौवन क्या है ? बिजली की चिनगारी जब चमके तो प्रकाश, नहीं तो जलादे।

मनुष्य अपने जीवन को अच्छा या बुरा संगत के ऊपर बनाता है। पत्थर की भव्यता शिल्पी ही दे सकता है, गुंडा नहीं।

जीवन को भव्यता देनीं हो तो संत की शरणागति करनी चाहिये, न कि किसी दुर्जन की । मनुष्य का जीवन धर्ममय होना चाहिये । खाना, पीना, सोना, सुनना ये सभी कार्य समय से होना चाहिये । लेकिन स्वास निरन्तर ली जाती है। धर्म-भोजन, श्रवण, दर्शन की तरह नहीं हैं मात्र स्वांस की तरह है जो जीवन को सुरक्षित रखता है ।

शैशव की सरलता, युवानी की साहस, तथा वृद्धा वस्था की समझदारी से अपने जीवन को अलंकृत करना चाहिये । ऐसा जीवन जीना चाहिये कि मरने के बाद भी अग्नि संस्कार करने वालो कें आँख से दो बूंद आंसू अवश्य बहें । चिता से रक्त का, व्यसन से धन का, ईश्वर से विमुख होने पर जीवन का पानी हो जाता है ।

जीवन को प्याज बनाया जा सकता है और गुलाब भी बनाया जा सकता है । गुलाब के फूल की पंखुडी को खोलते जांय तो उसकी एक-एक पंखुडी महक से आनंद देती जायेगी, जब कि प्याज के पर्त को खोलते जायं तो आँख में पानी निकलने लगता है । मिलने वाले के साथ पुन- पुनः मिलने की इच्छा न हो तो ऐसे जीवन की आवश्यकता ?

जीवन में वरसों तक भरने की अपेक्षा वरसों में जीवन भरना उत्तम है । खा-पीकर भरजाने वाले की मृत्यु होती है जब कि अच्छे काम करने वालों का स्मरण होता है संघर्ष विना का जीवन, नमक विना की रसोई फीकी होती है, प्रमाद जीवन के लिये मृत्यु के समान है । जागृति यह जीवन है ।

पोथी पढे वह पंडित, पोथी बोले वह वक्ता, पोथी जीवे वह संत, केवल उम्र बढे तो अस्तित्व लेकिन उम्र के साथ विकास होतो जीवन कहा जायेगा ।

प्रभु भक्ति से जीवन में शांति तथा शक्ति संपन्नता मिलती है । केवल विषय भोग से जीवन में कमजोरी ही आती है ।

इसलिये जीवन में धर्म तथा भक्ति का ऐसा वातावरण हो जिससे अंत में प्रभु प्रसन्न हो जांय । बस जीवन में जीने का यही सार है ।

पृष्ठ ५ का चालूं ...

हे युवानो !!!

होगा ही साथ में सत्संग में परिवर्तन होगा, सामाजिक परिवर्तन होकर सारे राष्ट्र का परिवर्तन कर सकेगा । मात्र विचार करने से कभी सफलता नहीं मिलती बल्कि क्रियान्वचन करना परमावश्यक है । आयोजन करके अपने लक्ष्य की तरफ बढने में सच्ची सफलता है । सच्चे संतो की सलाह लेकर महाराज के मिलन स्मी लक्ष्य तथा धाम स्मी ध्येय तक पहुंचा जा सकता है । संघर्ष ही अपनी प्रगति का सच्चा कारण है । इस लिये उत्साही होकर अपनी बिखरी हुई शक्ति को एकत्रित करो, निराशा को हटा दो, उत्साह मनुष्य को जीवन में आगे बढने के लिये शक्ति देता है । सत्संग की, समाज की, देश की, सेवा करके प्रभु की प्राप्ति करना हो तो उत्साह आवश्यक है ।

हम सत्संग की उन्नती के लिये आगे नहीं चलेंगे तो कुछ नहीं लेकिन उत्साह जागे तो एक दिन परिवर्तन तो अवश्य होगा । जीवन में कोई भी कार्य करना हो तो उत्साह की आवश्यकता होती है । चाहे वह जागतिक हो या प्रभु सम्बधी हो । बाह्य जगत के लिये जिस प्रकार उत्साह जरुरी है । इसी तरह जीवन में भगवान की प्राप्ति के लिये अन्तःशत्रुओं को जीतकर भक्ति में आगे बढने की जरुरत है ।

सत्संग में युवानों का खूब महत्व है । सत्संग में आज संयमी तथा उत्साही युवानो की विशेष जरुरत है । युवान युवा अवस्था में अपने मन के अनुकूल चलने की इच्छा विशेष रखते हैं, इस लिये सत्संग में आचार्य महाराजश्री, बड़े संत, तथा बड़े सत्संगियों की सलाह लेना आवश्यक है । कारण यह कि किसी भी दिशा में आगे बढने के लिये मार्गदर्शक का होना आवश्यक है । क्योंकि अनुभवी व्यक्ति ही मार्गदर्शन दे सकता है । इसलिये युवान अपने जीवन में तथा सत्संग में आगे बढने के लिये सत्संग स्मी कवच को अवश्य धारण करें जिससे अन्तःशत्रुओं से लड़ने की शक्ति बढे ।



जलझीलणी

- साधु घनश्यामप्रकाशदास - जमीयतपुरा (महंत स्वामी माणसा)

"उत्सव प्रिया: मानवा:" जगत में जीवन निर्वाह करते-करते दान-वृद्धि, यश, अपयश तथा लोकेषणा, पुत्रेषणा, तथा वित्तेषणा के चक्कर में पिसाता हुआ मानव जब थकजाता है तब अपनी थकान को उतारने के लिये समाज में मेला स्मी मनोरंजन प्रारंभ किया। परंतु इसमें काफी दोष आये। इस दोष को दूर करने के लिये धार्मिक उत्सवों का आयोजन प्रारंभ हुआ। भिन्न-भिन्न अवसर पर भिन्न-भिन्न देवों की भक्ति द्वारा भक्तों का निश्चित समुदाय एकत्रित होकर अपने सुख-दुःख को समूह में बांटकर शांति या हलकापन का अनुभव करने लगे। ऐसे ही उत्सव में हम आज आनंद का अनुभव करें।

भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी से गणेशोत्सव प्रारम्भ होता है। सभी लोग अपने अपने घरों को तथा गलियों को मुहल्ले को खूब सजाते हैं और वहाँ छोटे-बड़े भगवान गणेश की मूर्ति को खूब धूम धाम के साथ स्थापन करते है। षोडशोपचार पूजा करके दिव्य आरती करते हैं। कितने श्रद्धालु तो उपवास करके मंत्रजप के साथ स्तुति भी करते हैं। बाद में भाद्रपद शुक्ल एकादशी के दिन भव्य नगरयात्रा कराते हुए देवाधिदेव का जलनिधि में विसर्जन करते हैं।

वर्षो पूर्व भगवान श्रीकृष्ण परमात्माने इस एकादशी के दिन अपनी अत्यन्त प्रिय गोपियों के साथ यमुना में जल विहार किया था। उस समय गोपियों के प्रेम में वशीभूत होकर भगवानने उनके द्वारा किये गये दुग्धाभिषेक को स्वीकार किया था। उसी समय से इस एकादशी का नाम जलझीलणी एकादशी नाम पड़ा। देवशयनी तथा देवोत्थानी एकादशी के बीच में आने वाली इस एकादशी के विषय में विशेष महत्व बताया गया है। इसकी महिमा तो और बढ गयी जब भगवान स्वामिनारायण ने इस एकादशी का बहुमान किया था।

आषाढी मेघ जब खूब बरसता उस समय चारो तरफ नदी नाले, जलाशय भरकर छलक जाते तब भगवान स्वामिनारायण अपने संतो के साथ तथा भक्तों के साथ घेला नदी में जलक्रीडा करते। कभी जेतलपुर आकर देवसरोवर में जलक्रीडा करके आशजीभाई तथा गंगा मां को सुख देते। साबरमती के जल में नारायणघाट के किनारे संत-भक्तों के साथ स्नान क्रीडा करते तो चन्दन के कलर तथा संतो के वस्त्र के कलर से पानी का रंग बदलकर लाल रंग में बहने लगता था।

"रंगे भरेला लालजी जलमां झीले बलवीर।
राता थई ने वहवा लाग्या साबरमतीना नीर॥"

जब महाराज बड़ताल विराजमान होते उस समय गोमती तालाब में यह जलक्रीडा करते। जब उत्तर गुजरात में होते उस समय अडालज की बावली हो जमीयतपुरा की प्रभा बावडी हो संत-भक्तों के साथ स्नान (जल विहार) करते। किसी प्रसंग पर भादरा गाँव की गहरी नदी में भक्तराज मूलजी शर्मा तथा लालजी सुथार के हृदय का प्रेम समझकर सभी मित्रों के साथ श्री स्वामिनारयण भगवानने सहज आनंद को वरसाया था। इस एकादशी को मोक्षदायिनी बताये थे। इस व्रत में निर्जल व्रत का उपवास करने का विधान किये थे।

आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज वर्षो तक ठाकुरजी तथा गणपतिजी को हाथी के हौदे में बैठाकर सम्पूर्ण शहर में नगरयात्रा निकालते थे। अंत में कांकरिया के निर्मलजल में विसर्जित करके साबरमती के किनारे नारायणघाट पर संत भक्तों के साथ ठाकुरजी की पूजा करके जल में तैराते हुए आरती करते हुए सभी आनंद का अनुभव करते थे। पू. आचार्य महाराजश्री जल में पधारकर संत-भक्तों के ऊपर प्रसादी का जल फेंकते।

इस प्रसंग पर वस्ग देव भी धन्यता का अनुभव करते थे। जीवन सृष्टि के जीवनस्मी जल की भेंट करके कृत्य हो जाते थे। वर्षो से इस मंगलकारी प्रसंग को श्रीहरि के बताये मार्ग पर चलते हुए आज भी हम झलझीलणी के उत्सव को मनाते है। श्रीहरि तो इस उत्सव में भूख-प्यास भी भूल जाते थे।

ऐसी सुखदायक तथा पापमोचनी जलझीलणी एकादशी के ऐसे अवसर पर भक्ति के रस में डूबकर अपने को कृतार्थ बनायें।



दयालु प्रभु की दया

- शा. अभयप्रकाशदास गुरु महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारायणघाट)

इस विश्व में सबसे दयालु एक मात्र परमात्मा हैं। परमात्मा की हर तरह से कृपा होने पर भी मनुष्य को परमात्मा की दया दिखाई नहीं देती। संसार में कोई सामान्य मदद करे तो वह दिखाई देता है। परंतु परमात्मा की विशाल दया की हम उपेक्षा कर देते हैं। ऐसा न हो जाय की किसी का पैर फिसले और पैर टूट जाय। सभी लोग उसे उठाकर हास्पिटल लेजांय वहाँ पचीस सौ जितना डो. खर्च मांगे, उस समय वह व्यक्ति कहे कि साहब हमारी पगार ही दो हजार है तो हम पचीस सौ रुपये कहाँ से लायेंगे ? थोड़ा आप कम कर दें तो अच्छा रहेगा। उस समय डो. कहेगा कि तो आपके पास कितना है ? उसने कहा साहब मेरे पास मात्र पांचसो हैं। डो. ने कहा लाओ. पांचसौ बाकी दो हजार आपका हम मांफ कर देते हैं। यह सुनकर उस रोगी के मन में डोक्टर के प्रति कैसे भाव आयेंगे ? रोगी कहेगा कि डोक्टर साहब कितने दयालु है। हमारे दो हजार रुपये माफ कर दिये, भगवान की तरह दयालु है। यद्यपि डोक्टर तो टूटी हुई हड्डी को जोड़ता है, जब कि परमात्मा तो सम्पूर्ण शरीर बनाकर भेंजता है तो भी परमात्मा का कोई उपकार नहीं मानता। थोड़ा सा उपकार करने वाले को लोग भगवान कहने लगते हैं। जिस परमात्मा के उपकार को कभी भूला नहीं जा सकता, उसे लोग भूल जाते हैं। भगवान तो शरण में आये हुए पतित का भी उद्धार कर देते है। इतना ही नहीं उसे भक्त कर देते हैं। अपने धाम को देते है। सर्वोपरि श्रीहरि की दयालुता का तो अनेको प्रसंग है। एक बार भगवान स्वामिनारायण जेतलपुर में महा विष्णुयाग का आयोजन किये। इस यज्ञ का सम्पूर्ण अधिकार स.गु. आनंदानंद स्वामी को दिये। स्वामी यज्ञ में आने वाले अतिथियों के लिये भोजन सामग्री की व्यवस्था किये। जिस में गेंहूँ चावल, दाल, घी, तेल, गुण तथा अन्य सामग्री को एकत्रित किये। यज्ञ प्रारम्भ होने में दो दिन बाकी था। स्वामी महाराज के पास गये और कहे कि महाराज सभी तैयारी हो गई है। परंतु गेहूँ पीसने का काम रह गया है। महाराज विचार करने लगे। अब क्या करें ? दो दिन में हजारो की रसोई का आंटा कैसे तैयार होगा ? उन दिनो ऐसे इलेक्ट्रिक साधन तो थे नहीं। महाराज विचार कर सभा सें कहे कि प्रत्येक भक्त एक-एक मन गेहूँ अपने घर लेजाकर पीसवा कर ले आयें। जो एक मन गेहूँ पीस कर ले आयेंगे उनका हम कल्याण करेंगे। यह घोषणा जेतलपुर गाँव में रहने वाली एक गणिका भी सुनली। उसके मन में हुआ कि मैं सम्पूर्ण जीवन खराब काम में बिताई हूँ, यदि यह पवित्र काम करने का अवसर मिलजाता तो मेरा कल्याण हो जाता मेरे कल्याण के लिये यह अवसर दिया है। ऐसा मन में संकल्प करके भगवान के पास गई और निवेदन की। भगवान प्रसन्न होकर कहे कि तुम गेहूँ स्वयं पीसना और स्वामिनारायण नाम लेते रहना। उस गणिका ने ऐसा ही किया। लेकिन उसके हाथों में छाले पड़ गये, सुबह होते ही पूरा गेहूँ पीस कर वह महिला आटा लेकर सभा मंडप के सामने महाराज के चरण में रखदी। उस समय कितने लोग तो कहने लगे कि एक तो यह गणिका दूसरे स्वंय रात भर में इतना गेहूँ पीसकर नहीं लाई है। दूसरे से पिसवाई होगी। यह सुनकर महाराज ने उस बाई से कहा कि तुम सभी को अपना हाथ दिखाओ कि हमने ही यह गेहूँ पीसा है, किसी अन्य ने नहीं। सभी देख कर आश्चर्य में पड़ गये, उसके हाथ में छाले पडे हुए थे। उस बाई के ऊपर महाराज खूब प्रसन्न हो गये। और कहे कि आज तुमने गेहूँ नहीं बल्कि अपने पाप को पीस डाला है। इस लिये हम तुम्हारा मुक्तानंद स्वामी की तरह कल्याण करेंगे।

ऐसा दयालु दूसरा कौन हो सकता है। अपनी शरण में आइ हुई एक पापी आत्मा को मुक्तानंद स्वामी जैसे संत के साथ मुक्ति दे दिये। अपनी शरण में आये हुए को मुक्ति तो दिये ही हैं इसके साथ अपने को मारने आई तो भी उसका उद्धार किये। रावण को तारे। कंस को तारे। शिशुपाल को तारे। इस तरह अनेकों को तारे जो भगवान की शत्रुबुद्धि से याद किये।

विचार करने पर ख्याल आयेगा कि जो शरण में आते हैं उनको तो तारे ही है, बल्कि जो शत्रुभाव से आये मारने के लिये, उनका भी कल्याण किये। इस तरह दयालु परमात्मा दुनिया में अन्यत्र कहाँ। इस लिये हम भी ऐसा परमात्मा दयालु की याद करते रहेंगे तो अवश्य हमारा भी कल्याण करने अवश्य पधारें गे।

कपटीने कपट किया - ब्रह्मभाव की वाणी

- पटेल गोरधनभाई शंकरलाल (सोजा)

जेठ महीनामां मावजी रे, भूमि तजी चाल्या स्वधाम रे
श्यामलिया, सुखडां दीधां घणा सांभणे ।

स.गु. प्रेमानंद स्वामी की वाणी सुनकर सभी के दिल में करुणा निधि पूर्वक पुरुषोत्तम परब्रह्म परमात्मा की दिव्य मूर्ति, दिव्य स्वरुप तथा उनकी दिव्य लीला चरित्र हरिभक्तों के हदय में प्रस्फुटित हो उठता है । स्वामी की वाणी में एक विरह वेदनां के साथ श्रीहरि की मूर्ति का दिव्य दर्शन होता है । वह कैसी दिव्य मूर्ति रही होगी ..... तो दर्शन करिये माणकी असवार श्रीहरि का

जेठे जीवन चालिया, निर्मोही मारा नाथ,
दर्शन विना दु:खियों घणो, सर्वे व्रजनो साथ ।
अंतर ताप वियोगनो, बाहर भी लू वाय,
मळ्या विना हवे मावजी, जुग तुल्य रजनी थाय ।
फलिया मां घोड़ी फेरता, छोगा धरता शिर,
ते दिन के दी देखाडशो, डोल रीया जगदीश ।
प्राणजीवन जी पूरिये, हैडा केरी हाम,
ब्रह्मानंद ना नाथजी, आवो ने श्री घनश्याम ।

श्रीहरि सं. १८८६ ज्येष्ठ शुक्ल-१० के दिन स्वधाम पधारे उस समय ब्रह्मानंद स्वामी जूनागढ मंदिर के शिखर का काम करा रहे थे । उसी समय गढडा से गोपालानंद स्वामी तथा दादा खाचर ने स्वामी को त्वरित लाने के लिये भगुजी को ऊँट ऊपर प्रेषित किया था । वे श्रीजी महाराज के स्वधाम गमन का समाचार दिये । इस कारण समाचार को सुनकर स्वामीने मिस्त्री से कहा कि "आगे यह दीवाल अब मत बनाना । कपटी ने कपट किया" कैसे वे संत थे कैसा उनकी परब्रह्म परमात्मा में भाव था । सखा भाव का नाता था । श्रीकृष्ण तथा अर्जुन जैसा भाव था । मात्र जीव का कल्याण करने के लिये सर्वजीव हितावह: के लिये अवतार धारण किये थे । धर्म संस्थापन, मंदिर निर्माण, संप्रदाय के शास्त्रों का निर्माण तथा कीर्तन करके श्रीहरि को प्रसन्न करने का प्रयास कविता के माध्मय से सतत करते रहते ।

एक समय श्रीजी महाराज अक्षर कक्ष में नाराज होकर बैठ गये । सभा का समय हुआ, संत, पार्षद, ब्रह्मचारी दर्शन के लिये आये तो भी सोते रहे । तब सभी ने विचार किया कि जब जागेंगे तब दर्शन तो होगा । लेकिन ब्रह्म मुनि की वाणी मौन रह नहीं सकी, उन्होंने तुरंत कीर्तन बनाकर गया -

रमत मनोहर रास, सदा सुखवास स्वतंतर,
प्रबलगोपजन पास कमल आभास शशीकर ।
विहरत करत विनोद, मोह अंतर नहीं आवे,
अरसपरस एकतार, दरस न वरस दर सावे ।
सुख स्म सदा अशरण शरण, फनां करण भव कुंदके,
संत साथ सदा केलत, सही नाथ सो ब्रह्मानंद के ।

सदा सुख के दाता भगवान मनोहर रास खेलते हैं । गोपी यशोदा माता के सामने चंद्रमां की किरणों के जैसी जिसकी आभा है वह क्लिन्न हो जाती है । अशरण के शरण भगवान है जो भव बंधन को काटने वाले है, उन्हीं परमात्मा के साथ ब्रह्मानंद स्वामी सखा भाव से आनंद विनोद करते । संतो के साथ क्रीडा करते थे । कैसे अद्भुत थे । श्रीहरि संतो के साथ आंख मिचौनी खेलते थे । जो ब्रह्मरस चाखा हो वही यह आनंद ले सकता है ।

"हरि आज्ञा का उल्लंघन थाय, सुख एमां नहीं उपजाय ।"

यह महाज्ञान जिसके जीवन में हो गया हो, उसका काल भी कुछ नहीं कर सकता है । ऐसे ब्रह्मानंद स्वामी यदि यहां होंगे तो हमें धाम में जाने नहीं देंगे । इसलिए ब्रह्मानंद स्वामी को जूनागढ मंदिर निर्माण में गुणातीतानंद स्वामी के पास भेंज दिये । यद्यपि श्रीहरि का स्वास्थ्य उस समय ठीक नहीं था । फिर भी गुणातीतानंद स्वामी के पास ब्रह्मानंद स्वामी को जाने की आज्ञा हुई तो विना विचारे आज्ञा स्वाकीर करके चल दिये थे ।

अनुसंधान पृष्ठ २० पर....

श्री स्वामिनारायण मंदिर (इटास्का) शिकागो USA का दशाब्दिक पाटोत्सव

- प्रविणभाई भगत - धीरुभाई भुंगलिया

श्री नरनारायणदेव देश की संस्था इन्टरनेशलन स्वामिनारायण सत्संग ओर्गेनाईजेशन **I.S.S.O., U.S.A.** की स्थापना प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने की थी । इस संस्था के अंतर्गत **U.S.A.** में ११ मंदिरो का निर्माण हो चुका है । उन मंदिरो में शिकागो (इटास्का) का शिखरी मंदिर सर्व प्रथम निर्मित हुआ है । मंदिर की विशेषताओं में भव्य सभा मंडप में विराजमान सर्वावतारी मन मोहक श्री घनश्याम महाराज की बाल स्वरुप मूर्ति आकर्षण की केन्द्र है । यह मूर्ति श्री राधाकृष्ण देव की मूर्ति के साथ विराजमान है । श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव के संगमरमर की मूर्ति उत्तर-दक्षिण में विराजमान है । इसके साथ पांच देव की मूर्तियां भी परोक्ष के भक्तों की तथा सत्संगियों की मनोकामना पूर्ण करती हैं । सभा मंडप के चारो दिवालो पर श्रीहरि के लीला चरित्रों का भव्य चित्रण किया गया है । इस मंदिर का भव्य स्टेज तथा बेंकवेट होल एवं डाईनींग होल भी आकर्षक है । जिसमें धार्मिक तथा सामाजिक कार्यक्रम सदा चलता रहता है । मंदिर की बहनें रसोई बनाकर केटरींग की सेवा करती हैं । जिस की आय से मंदिर की लोन भरी जाती है । मंदिर पांच मीलीयन डोलर के खर्च से तैयार हुआ है । इसकी आप केटरींग से होती है । इन मंदिरो में मेडिकल चेकअप की समुचित सुविधा दी जाती है । इसके साथ बालकों को गुजराती शिक्षण तथा धार्मिक शिक्षण प्रति रविवार को दिया जाता है । जिस में करीब पांचसौ बालक भाग लेते हैं । मंदिर के प्रांगण में १०० गाडियों के पार्किंग की समुचित व्यवस्था है । इस के साथ मंदिर के अगल बगल में वंशी पहाडपुर पत्थर के कलात्मक स्तम्भों का भव्य एलीवेशन किया गया है । मंदिर के ऊपर पत्थर का सुन्दर तीन शिखर मंदिर की शोभा बढा रहे हैं । जो मुख्य मार्ग से जाते समय प्रवासियों के मन को आकर्षित करते रहते हैं । कितने तो शिखर को देखते ही नमस्कार करते हैं । कितने दर्शन करने भी आते हैं । मंदिर की कार्यवाहक कमेटी के उत्साह से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से बड़े बड़े उत्सव मनाये जाते हैं । प्रति वर्ष प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के पदार्पण होते ही भक्तों की चेतना में अभिवृद्धि हो जाती है ।

इस मंदिर का दशवां पाटोत्सव ता. २६-७-०८ से ता. ३-८-०८ नव दिन तक धूमधाम से मनाया गया था । जिसमें प्रतिदिन २ हजार से ३ हजार तक हरिभक्त लाभ लेते थे । अंतिम दो दिन तो करीब सात हाजर हरिभक्त लाभ लिये थे ।

इस प्रसंग पर हरिभक्तों के विशेष आग्रह पर धर्मकुल का पदार्पण हुआ । प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. १०८ श्री लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी, प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू. बड़ी गादीवालाजी, प.पू. श्रीराजा तथा प.पू. बिन्दुराजा सहित समस्त धर्मकुल पधारा था । यहाँ महोत्सव में आत्मीय भक्तों में अमेरिका के अपने **I.S.S.O.** चेप्टरो के मंदिरोने लाभ लिया था । लंडन, केनेडा इत्यादि के हरिभक्त पधारे थे । इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् सत्संगिजीवन नवाह्न पारायण की कथा रखी गई थी । जिस के वक्ता पद पर शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) बिराजमान होकर कथामृत पान कराये थे । इस के साथ धोलका मंदिर के महंत शा. स्वा. पूर्णप्रकाशदासजी तथा जेतलपुर के शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी पधारे थे । महोत्सव का कथामंच संचालन शा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजीने किया था । अमेरिका के अन्य मंदिरों में सेवाकरने वाले हरिभक्त तथा संत भी पधारे थे । इस प्रसंग पर हरियाग में करीब एकसो यजमान भाग लिये थे । भगवान के महाभिषेक की भव्यता - दिव्यता में विशेष अभिवृद्धि तब हुई

अनुसंधान पृष्ठ १६ पर....

पार्षद केसर भगत

- चंद्रकांत मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

गुजरात के भाल प्रदेश में मूलजी ब्रह्मचारी का प्रतिष्ठित गाँव था। इश्वरीयगुण जिसमें थे वे थे मूलजी ब्रह्मचारी। इस गाँव के क्षत्रिय ठाकुर बापूभाई तथा बूआ की प्रार्थना से सं. १८७६ में श्रीजी महाराज यहाँ पधारकर हुताशनी का उत्सव किये। इस गाँव का नाम है मछियाव विक्रम के दूसरे यातीसरे दशक में वहाँ देवजाति के उत्तमभक्त हरिभाई महेडु तथा उनकी धर्मपत्नी राजूबा रहती थी। अपने संतानों के साथ हरिभाई आनंद के साथ भगवान की भजन करते तथा अपना सांसारिक व्यवहार चलाते थे। एकबार ध.धु. आदि आचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री मछियाव गाँव पधारे। दंपति को जब पता चला तो बड़े आनदं के साथ आचार्य महाराजश्री को अपने घर पदार्पण करवाये। उस समय सं. १९२० में सबसे छोटा बेटा दो वर्ष का था। महाराजश्री के पास खड़ा था। पिताने कहा यह सबसे छोटा केसर है। आप इसे उत्तम भक्त होने का आशीर्वाद दीजिये। महाराज ने कहा यह महान भक्त होगा और हमारे कुल की सेवा करेगा। महाराजश्री की ऐसी वात सुनकर हरिभाई के आनंद की सीमा न रही। उस समय बेटे के ऊपर न्यौछावर होने लगे।

कहा जाता है सुख दुःख का दशक होता है। कभी सुख तो कभी दुःख क्रम आता है। "रात्रि के विना दिन की क्या कीमत" वसंत कोये नथी ग्रीष्म सुनी"। कवि इस पंक्ति में जिंदगी का मर्म भरदिया है। चारण कुटुम्ब बड़े सुख से जीवन बिता रहा था। उसी समय गाँव में महामारी का रोग हुआ जिसमें हरिभाई की पत्नी तथा दोनो बेटे दिवंगत हो गये। पत्नी जो पति की अर्धांगिनी कही जाती है। वह तथा दो बेटो के दिवंगत होने से हरिभाई टूट गये। बीच मझदार में डूबने कि स्थिति हो गयी। इन्हें भी कालरा के चिन्ह दिखाई दिये। छोटे बेटे को भी वही लक्षण। अब वे मन ही मन भगवान की प्रार्थना करने लगे कि हे प्रभु! हम दोनो की यदि जान सुरक्षित रह जायेगी तो सम्पूर्ण सम्पति श्री नरनारायणदेव को अर्पित कर देंगे। भगवान को शायद यह इष्ट भी था। संयोग वश वे ठीक हो गये और सम्पूर्ण अपनी चल-अचल सम्पत्ति बेचकर छोटे बेटे केसर को साथ लेकर अहमदाबाद आ गये। सम्पत्ति का जो पैसा आया वह श्री नरनारायणदेव को अर्पण कर दिये। बाप तथा दोनो बेटे आचार्य श्री केशवप्रसादजी महाराज की सेवा में रहे। बड़ा बेटा हलुभाई दीक्षा लेकर त्यागी हो गया उनका नाम आचार्यश्री ने रामकृष्णदासजी रखा था।

छोटे बेटे केसर दानजी तो मात्र पांच वर्ष के थे। बिलक्षण आचार्य महाराजश्री बालक की शारीरिक आकृति तथा स्वभाव देखकर उनके भविष्य को जान गये। केसरदानजी को अपने पास रख लिये। पढ़ने-लिखने की व्यवस्था अपने पास कर दी। केसरदानजी की सेवा भावना दृढ थी। इसलिये पढने की अपेक्षा सेवा में मन लगाये। महाराजश्री की सेवा के सिवाय अन्य कोई कार्य में विशेष मन नहीं लगाते। केसरदानजी की सेवा देखकर आचार्य महाराजश्री उन्हे अपनी छडीदार के स्प में स्वीकर कर लिये।

केशवप्रसादजी महाराजश्री में डंका बजाने की अद्भूतकला थी। यह कला केसरदान में आ जाय इसके लिये उत्तम प्रयास करके डंका बजाने में प्रवीण बना दिया। उन दिनों जब राजा-महाराजाओं की पालकी - या सवारी निकलती तो नाना प्रकार के वाद्य यंत्रो के साथडंका बजाने की अलौकिक प्रथा थी। डंका बजाने में कई प्रकार की ध्वनि निकलती है। इस कला का प्रदर्शन घोड़े पर दोनो तरफ एक-एक नगारा होता है जिसे बजाने वाला उसी घोड़े पर बैठकर बजाता है। इस कला में निपुण केसरदानजी थे। जैसी शब्द ध्वनि उत्पन्न करनी हो वैसा लक्ष्य करके नगारा बजाया जाता है। एकबार आचार्य महाराजश्री डुंगरपुर पधारे थे। वहाँ

केसर भगत ने स्वामी का डंका ऐसा बजाया कि डुंगरपुर के राजा उस डंके की आवाज सुनकर आफरीन हो गये। केसर भगत को पुरस्कार देकर तथा मस्तक पर पगड़ी बांधकर संमान किये थे। इसी तरह एकबार केसर भगत बड़ताल गये थे वहाँ पर डंका बजाकर आचार्य विहारीलालजी महाराज को प्रसन्न किये थे। महाराजश्रीने प्रसन्न होकर साल ओढाकर सन्मान किया था।

उन दिनों संगीत विद्या में इडर राज्य के गायक वृंद की खूब प्रशंसा थी। अहमदाबाद से बहुत सारे संत संगीत सीखने वहाँ जाते थे। महाराजश्रीने केसर भगत को संगीत सीखने के लिये वहाँ भेंजे थे। तबला, सितार, हारमोनियम इत्यादि वाद्य यंत्र में कुशळता प्राप्त की। इसके अलांवा अश्व विद्या तथा विंगलशास्त्र सीखने के लिये भुज प्रेषित किये। आचार्य महाराजश्री भुज के महाराव के ऊपर एकपत्र लिखे कि यहाँ से पढने के लिये जिसे हम प्रेषित कर रहे हैं, उसके लिये उचित व्यवस्था की जियेगा। वहाँ जाकर केसर भगत घुड़सवारी पिंगल शास्त्र का ज्ञान प्राप्त किये। लालजी श्री पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराजश्री का सम्पूर्ण देख भाल केसर भगत के उपर था।

श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री का जब गादी अभिषेक हुआ उस समय वें ३ वर्ष के थे। इसलिये उस समय उनबाल आचार्य का पठन-पाठन अन्य सभी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा तथा व्यवहारिक कार्य केसर भगत के ऊपर सौंपा गया। उन्होंने यह बड़ा उत्तरदायित्व का कार्य हृदय से स्वीकार कर लिया। दिन-रात एक करके चौबीस घंटे सेवा में लगे रहते थे। केसर भगत महाराजश्री के शिष्य भी थे। तथा हितचिंतक शिक्षक भी। वासुदेवप्रसाद महाराजने जब अपना आचार्य पद का कार्यभार सम्हाला तो केसर भगत को अपना छड़ीदार चालू ही रखे। इतना ही नहि बल्कि केसर भगत की पूछ परछ करते रहते थे। धर्मकुल में पू. श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का जब जन्म हुआ उस समय भी महाराजश्रीने लालजी महाराज का देखभाल का कार्य केसर भगत को दिये। लालजी महाराजश्री बड़े तेजस्वी थे। जब बड़े हुए तब नये-नये जानकारी की इच्छा होती गई। इसलिये डंका बजाने की कला केसर भगत से सीखे थे। पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के गद्दी पर बैठने के बाद उनकी भी छत्री बुलाने का काम तथा छड़ीदार वे ही रहे। इसके बाद जब तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का जन्म हुआ उस समय भी बाल लालजी की देखरेख का कार्यभार केसर भगत को दिया गया। इस प्रकार प्रथम आचार्य से लेकर देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तक पांच आचार्यो की प्रसन्नता प्राप्त करने वाले तथा लालजी के रुप में तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तक प्रसन्नताप्राप्त करने वाले केसर भगत की धर्मकुल की सेवा अद्वितीय रही है। सेवा तथा निष्ठा की कद्र करने के लिये पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री उन्हें संतो की सभा में बैठने के लिये अलग आसन की व्यवस्था की थी।

केसर भगतने श्रीजी महाराज तथा अक्षर मुक्तो की विशाल फोटो गणपतिजी भगवान के पीछे लगवाया है। इसी तरह गढपुर मंदिर में भी ऐसा ही फोटो लगवाया है। छोटे-बड़े मंदिरो में श्रीजी महाराज की प्रसन्ता के लिए बहुत सेवा की है। मूली मंदिर की वाड़ी में चरणारविंद को आचार्य महाराजश्री द्वारा प्रतिष्ठित करवाये थे।

केसर भगत की एक महेच्छा थी कि स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामीजी का विस्तृत जीवन चरित्र प्रसिद्ध हो। स्वंय कार्य करने में असमर्थ हुए तो प्रतिष्ठित राजकवि श्री मावदानजीभाई को यह कार्य देदिये। वे बड़े उत्साह के साथ जीवन चरित्र छपवाकर केसर भगत की प्रसन्नता प्राप्त की। केसर भगत ने एकनाम माला भी तैयार की है। जिसमें दोनो देशों की मूर्तियों का तथा प्रसादी के स्थलों का, धर्मकुल की नामावली, श्रीहरिके समकालीन संत, वर्णी, पार्षद, मोटीबा, लाडुबा इत्यादि बहनों का नाम संकलित किया है। श्रीहरि की प्रेरणा से उन्होंने सारे हरिभक्तों के मनोरथ पूर्ण किये है।

केसर भगत वृद्धास्था में जब चलफिर नहीं सकते थे तब पू. देवेन्द्रप्रसादजी महाराज उनके निवास पर स्वयं मिलने जाते थे। वे सं. २०१९ में अक्षरनिवासी हो गये। धर्मकुल का दश-दश दशक तक सेवा करने वाले केसर भगत दूसरे भगुजी थे।



सत्संग सुरभि

कब आवे महाराज !

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

"सभी कुशल हैं न ?" महाराज पूछ रहे थे ।

मांगरोल में महाराज पधारे तो सारे गाँव में उत्सव जैसा माहौल हो जाता था । पहले से समाचार मिल जाता तो सारे गाँव को सजाया जाता था । लोग उत्सव करके स्वागत के लिये सामने से लेने जाते । कभी-कभी तो महाराज विना बताये भी आते । तब अपने काम-काज को छोड़कर लोग महाराज का दर्शन करने पधारते थे । महाराज सभी से कुशल क्षेम प्रेम से पूछते, आप लोग कुशल से हैं न ? ऐसी प्रेममयी वाणी सुनकर सभी चिंता मुक्त हो जाते । सभी लोग भगवान के चरण में गिरजाते थे । महाराज स्नेह वाले नेत्रों से अविरत स्नेह वरसाते रहते ।

उस समय सभी सत्संगियो में आनंद की लहर फैल जाती । महाराज के प्रति सभी को अनन्य श्रद्धा तथा असीम स्नेह । महाराज की बोल ही आज्ञा तथा इच्छा ही भाग्य समझते थे ।

आज महाराज जब मांगरोल पधारे तब किसी ने महाराज के समक्ष सभी के मन की बात की, आप दो शब्द आणंदजी को कहें तो अच्छा । ये स्वयं अच्छे सत्संगी हैं लेकिन अपने मन को घर में क्यों नहीं लगाते ? बाहर से प्रेमी लगते हैं । इस सूचना में ईर्ष्या के भाव को महाराज समझ गये ।

आरती पूर्ण होने के बाद महाराज ने इस विषय को उठाया हमारा सत्संग देखा देखी का नहीं है । यह मार्ग समझदारी का है । जो कोई यहाँ आयेगा या दूसरे को लायेगा वह समझकर नीति-नियम-व्रत का पालन करेंगा, तथा भक्ति करके हममें चित्त जोड़ेगा लेकिन घर के बालक को, दामाद को, भाई को साले को या किसी भी अन्य को आग्रह नहीं करगा । बिलम्ब हो तो अपने में कुछ कमी है ऐसी समझना अधीर नहीं होना, उदास भी नहीं होना । आपका व्यवहार बोलेगा । आपकी भक्ति जादू का काम करेगी । इसलिये कोई किसी को दोषनहीं देना । कटु वचन नहीं बोलना । दुराग्रह भी नहीं करना ।

इस प्रकार किसी कानाम लिये विना श्रीहरिने वात कही । सभी वहाँ से अलग हुए । महाराज अपने विश्राम की तरफ चले । कूए की तरफ कोई बर्तन धोरहा था । महाराज ने नाम लेकर कहा आणंदजी ? यह नाम सुनते ही आणंदजी काम छोड़ कर महाराज के पास आगये । आगे-आगे आणंदजी चल रहे थे । पीछे-पीछे महाराजजी । आराम कक्ष में दीपक रखा हुआ था । बिस्तर लगा हुआ था फिरभी, हाथ से बराबर करके महाराज को आराम करने के लिये व्यवस्था किये । महाराज जब पलंग पर सो गये तो आणंदजी महाराज का चरण दबाने के लिये खोजने लगे ।

महाराज ने कहा, रहने दीजिये हमें नींद आ रही है आप भी जल्दी घर चले जाइये । रात्रि में बर्फ गिरने वाला है । अब आणंदजी के आनंद की सीमा न रही वे रास्ते में यही चिन्तन करते जा रहे थे महाराजने हमारा नाम लेकर कहा महाराज की आज्ञा में कैसे रहा जाय । यही उनकी रटन हो गयी ।

रात्रि में अचानक वरसात चालू हो गई । प्रातः उठकर आणंदजी मंदिर पहुंच गये । महाराज के हाथ में दातून थी । आणंदजी महाराज के लिये लोटा का पानी भर देते है, इसके बाद दूसरी सेवा करने के लिये तत्पर होते हैं उसी समय महाराज मनाकर देते हैं । और कहते हैं कि आप से सारा गाँव नाराज है, सभी सजा चाहते हैं । इसलिये आप सभा में आज नहीं आना । आप हमसे दूर रहियेगा ।

आणंदजी दूर हो गये । महाराज की तरफ बढे नहीं । जैसे भगवान श्रीकृष्ण गोपियों को आंखो के इशारो से हटने के लिये कहा था । गोपियां डरकर हट गयी थी । ठीक यही स्थिति यहाँ आणंदजी की थी । महाराजने स्वयं आज्ञा दी थी । इसलिये अब किससे कहें ।

आज सभा में महाराज ने घोषणा की "आणंद को हमने विमुख किया है ।" अब ये हमारे पास न आवें । मंदिर में बाहर से दर्शन करें लेकिन सेवा न करे । सभा में सन्नाटा छा गया । जो कल तक महाराज के हृदय का हार था वह अलग कैसे हो गया ? ईर्ष्यालु एक दूसरे को देखते रह गये । बाद में महाराज खड़े हो गये तथा मंदिर में से बाहर निकल गये । आणंदजी महाराज को दूर से जाते देखते ही रहे । लेकिन "आप कब आयेंगे ?" ऐसा कह नहीं सके । दुःख तो था ही । चूपचाप पीपल के चबूतरे पर जाकर बैठ गये । जो सत्संगी आये उन्हें हाथ जोड़कर जय स्वामिनारायण कहे, कोई सामने से बोले, कोई चले गये ।

दूसरे दिन आणंदजी मंदिर आये । कितनों को आश्चर्य हुआ । विमुख होने के बाद भी मंदिर आ रहें, लाज नहीं आती ? कोई गलत काम किये पाप लगे । आणंदजी मंदिर की तरफ चल पड़े. मंदिर में जाकर भगवान को गीत सुनाये ।

"जीभलडी रे, हरिगुण गातां आवडुं शुं थाकी रे ।"

बाहर से खड़े होकर दर्शन किये, धुन-कीर्तन बोले तथा वहीं पर दंडवत प्रणाम किये । जो प्रतिदिन प्रेम से बोलाते थे वे आज एक बार भी नहीं कहे कि आप मंदिर में आकर दर्शन कीजिये । सभी का मंदिर है, आप का भी है, हम भी आपके साथ हैं । कोई दुष्टता वश लकड़ी पटकते हुए कहा हट ..... कूत्ती ....." ।

यह क्रम रोज का हो गया । सभी द्वेष दृष्टि से देखने लगे तथा तुच्छ शब्द का प्रयोग करने लगे । परिणाम स्वरूप आणंदजी का तप बढता गया । । ठीक उसी समय दर्शन करजाते संत-हरिभक्तों को प्रणाम करते । कथा के समय बाहर से कथा सुनते तथा मन में स्वामिनारायण मंत्र का जप करते रहते ।

इस तरह करते हुए तीनमहीने वीत गये । मन में महाराज के आने की प्रतीक्षा और बढ गई । निरन्तर गाँव के बाहर के मार्ग में महाराज की रात दिन इन्तजार करते रहते । "कब आवे महाराज ।"

इस वेदना को महाराज सुनलिये और तीन महीने के बाद महाराज मांगरोल पधारे । यह देख करके आणंदजी महाराज को बड़े आनंद में आकर मिलने के लिये आगे बढते है कि एक आवाज आती है - हट ..... कूत्ति ..... । यह सुनते उनके पग जहाँ थे वही रूक गये ।

इसके बाद सभा हुई । आणंदजी सीढी से महाराज का दर्शन करने लगे । वहीं से महाराज को प्रणाम किये । जहाँ भक्त लोग जूता-चप्पल उतारते वहीं पर बैठ गये जितने लोगों के जूता-चप्पल थे सभी को क्रम से साफ करके लगाने लगे । उधर भक्त लोग भगवान के गले में हार पहना रहे थे । इतना आश्चर्य तो यह हुआ कि श्री सहजानंद स्वामी महाराज एकाएक खड़े हुए, बड़ी तीव्रगति से बाहर सीढ़ी की तरफ बढने लगे, जहाँ पर आणंदजी थे वहाँ पहुँचकर गले में से एक बड़ा हार निकाल कर आणंदजी के गले में पहना दिये । इतनेमें आणंदजी महाराज को प्रणाम करने के लिये ज्यों ही खड़े हुए की गले लगा लिये और कहने लगे कि आप तो तपस्वियों से भी ऊँचे हैं ।

पीछे-पीछे सभी सभाजन आये । सभी के आश्चर्य की सीमा न रही । कोई समझ नहीं पाया । महाराज अपने हाथ से आणंदजी के हाथों को साफ करके अपने हाथों से पकड़कर आखो में देखने लगे ।

अखंड ब्रह्मांड के अधिपति निर्निमेष दृष्टि से देखते रहे । आणंदजी के आँखो से अश्रु की जलधारा इतनी बही की चरण का प्रक्षालन होने लगा ।

महाराज कुशल तो हैं न ? आणंदजी गद्‌गद् स्वर में पूछे । आप भले मेरी याद किये, अब मुझे भीतर

दर्शन का सुख देने की आज्ञा कीजियेगा । तो अभी मेरे साथ भीतर चलो । हाथ पकडे और अपने साथ लेकर भीतर गये । हम भी आपके दर्शन के लिये आतुर है । ऐसा कहकर आणंदजी को अपने बगल में बैठाये ।

सभी को समझ में आ गया कि भगवान की अपेक्षा भगवान के भक्त बड़े होते है । भक्त का संमान आवश्यक है । महाराज पूछने लगे "आपकी क्या इच्छा है ? मांगना हो तो मांग लो ।" महाराज ! हमें आप क्यों विमुख किये थे । हमारी जो भूल हो आप बतायें, हम भूल सुधारेंगे ।

भूल ! आप भूल किये यह हम तो कहे ही नहीं । जब आप कारण पूछ रहे हैं तो सुनिये । आपको इस जन्म की खबर है पिछले जन्म की खबर नहीं है । इसलिये पिछले जन्म के घर्म को हमने सुधार दिया । अब आप तप चुके हैं । कसौटी पर खरा उतरे हैं । अब आप निर्भय होकर भक्ति करें । सम्पूर्ण सभा इस संवाद को सुनकर विस्मित हो गई । ईर्ष्यालुओं को समझ में आ गया कि आणंदजी तो अभी भी हरि के हृदय का हार है ।

उसी रात्री में एक दूसरा चमत्कार हो गया । आनंदजी की पत्नी को स्वप्न आया कि स्वयं पानी भर कर वापस आ रही है, इतने में महाराज माणकी से नीचे उतरते हैं और इधर उधर देखने लगे हैं । बाई को हुआ कि महाराज पानी-पीना चाहते हैं तो वह माथे से घड़ा उतारकर शीतल जल की धारा से महाराज को तृप्त कर रही हूँ ।

प्रातः पति को जगाकर स्वप्न की बात बताई । "ऐसा ? आणंदजी आनंद किये । जो स्वप्न में हैं उसे साकार करलो । महाराज गाँव में ही हैं । उन्हें प्रसन्न कर लो । ऐसा सुंदर अवसर पुनः नहीं मिलेगा ? पत्नी के भीतर प्रभु के दर्शन की लालसा जग गई ।

नहा-धोकर दंपती मंदिर गये और महाराज को प्रणाम करके विन्ती किये की आज मेरे घर उत्सव कीजिये ।

महाराज प्रसन्न होकर घोषणा किये कि आज आणंदजी के घर हम उत्सव करेंगे ।

उन दिनो मांगरोल गाँव में सत्संग का जयजय कार हो गया । सभी समझ गये कि महाराज ने हरिभक्तों का मान रखा है । आणंदजी के पास तप कराकर उनके पीछे के पाप को जला दिया, तथा उनकी पत्नी को दर्शन देकर सत्संग किये ।

समग्र मांगरोल गाँव में मंगलकारी महाप्रभु की इस अद्‌भुत लीला से आनंद-आनंद छा गया ।

पृष्ठ ११ का चालूं ...

श्री स्वामिनारायण मंदिर (इटास्का) शिकागो

जब प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के तीनो स्वरूप द्वारा भगवान का महाभिषेक प्रारंभ किया गया । भगवान को महानैवेद्य भोग में अर्पित किया गया था । लगातार नवदिन तक मेडिकल चेक अप, ब्लड डोनेशन, बालकों का तथा युवानों का आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा भव्य नगरयात्रा शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया था । इसके साथ भव्य अतिशबाजी देखकर भक्तों में उत्साह की वृद्धि हुई थी । मंदिर के प्रेसीडेन्ट श्री जगदीशभाई पटेल इस प्रसंग पर आभार विधि किये थे । इस महोत्सव का आयोजन नवयुवकों ने किया था । इससे आनेवाली परंपरा अर्थात् भावी पीढी का सत्संग में महत्व बढने से मां बापको सम्पूर्ण संतोष हुआ था । इन युवानों को सत्संग में दृढ करने के लिये प.पू .आचार्य महाराजश्री का सतत प्रयास वृद्धो की अपेक्षा संस्कार की दृष्टि से तथा सत्संग में महत्व की दृष्टि से मंदिरो का निर्माण सार्थक हुआ है । एक मंदिर यदि ५०० जितने सक्रिय युवान तैयार करे तो ऐसे भव्य-दिव्य मंदिर के दशाब्दिक महोत्सव को कोटि कोटि बन्दन । इस महोत्सव के यजमान को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया था ।

सत्संग भोलपोथिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

अंदर के शत्रु को पहचानो

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

हे प्रभु ! हृदय में अच्छे काम करने की इच्छा होती है, भक्ति करने की इच्छा होती है। अच्छे विचार आते हैं। लेकिन ये सभी विचार थोड़े समय में बदल जाते हैं। कोई ऐसा भी हैं जो भजन-भक्ति नहीं करता फिर भी सुखी है। जो भजन-भक्ति करता है उसमें से कोई ही सुखी रहता है। बहुत भजन से क्या फायदा, बिना भजन के भी चलेगा। ऐसा विचार कभी कभी आजाते हैं। जब कि अन्दर आत्मा एक ही है तो भी दो विचार क्यों आते हैं ? एक कहती है भजन-भक्ति करना है, अच्छे मार्ग पर चलना है। दूसरी मना करती है, इसका क्या कारण है ?

माणावदर गाँव में भक्तों की विशाल सभा में मायाराम भट्टने उपरोक्त प्रश्न श्रीहरि से पूछा।

स्वामिनारायण भगवान उत्तर देते हुए कहे कि, हे भट्टजी ? हृदय में आत्मा तो एक ही है। परंतु हृदय कुरुक्षेत्र जैसा है। वहाँ दो सेना है। यह आदिकाल से हैं। इस सेना में आमने-सामने युद्ध चलता ही रहता है। इसमें भी एक सशक्त है दूसरी कमजोर है। इसमें कमजोर सेना के पाँच नाम दिये।

काम, क्रोध, रसास्वाद, स्नेह, मान ये पांच दोष एक परिवार के सदस्य हैं।

इसके अलांवा परिवार में और भी हैं जैसे ईर्ष्या, द्वेष राग-क्लेश इत्यादि। दूसरी तरफ धर्म, एकता, सद्भाव, सत्संग, इत्यादि की सेना है। इन दोनो में सदा यृद्ध चलता रहता है। जब कमजोर की पार्टी जीत जाती है तो खराब विचार आते हैं। जब अच्छे विचार वालों की जीत होती है तो अच्छे विचार आते हैं। यह युद्ध आज से नहीं बल्कि जब से सृष्टि हुई तब से चल रहा है।

ब्रह्माजी प्रभु की आज्ञा से जब से सृष्टि की रचना किये उस समय ब्रह्मा के मन से धर्म उत्पन्न हुआ। तथा पीठ से अधर्म उत्पन्न हुआ। बस उसी समय से मनुष्य के हृदय में इन दोनों का निवास हुआ और युद्ध भी प्रारम्भ हो गया। इसलिये अपने मन में दो प्रकार के विचार चलते रहते हैं। हे भक्तों ! खराब विचार न आवे उसके लिये उपाय बताते हैं। सब से पहले सत्संग, जो सत्संग प्रतिदिन करते हों, संतो के साथ सत्संग करते हो, शास्त्र का सत्संग करते हों, उसमें धीरे-धीरे सद्भाव, इष्ट की वृद्धि होने लगती है। धीरे धीरे दुर्गुण पराजित हो जाते हैं। तथा एक समय ऐसा होता है कि भक्त के हृदय में धीरे धीरे भगवान का आविर्भाव होता है और दुर्गुण भक्तों के हृदय से निकलने लगता है।

एक महात्मा को एक भाई गाली देने लगा, तो महात्माजी उसकी तरफ मात्र देखते ही रहे। सामने वाला तो गाली देकर जब थक गया तो कहने लगा कि मैं आपको इतनी गाली दिया आप कुछ बोले नहीं ? महात्माने कहा भाई ! जिसके पास जो होता है वही देता है न ? आपके पास इसका खजाना है हमारे पास इसका अभाव है अर्थात् इसकी चाहना नहीं है इसलिये चुप रहा। हमारे पास जो है वह आपको दूं तो आप लें या न ले। लेकिन आपके पास गाली का भंडार है, इसीलिये बोल रहे हैं न ?

जिसे संगीत आती है वही प्रारंभ करता है। जिसेनहीं आती वह मात्र देखता रहता है। लेकिन आपकी दी गई गाली मैंने एक भी स्वीकारा नहीं। वह सब आपके पास ही है। उसने पूछा, महात्माजी ? आपको गाली देने नहीं आती ? नहीं। तो क्यां देने आता हैं ? देखता हूँ ? बैठो ! हमें तो यह देने आता है। भगवान ने अच्छा मुख दिया है, इसमें भी अच्छी जीभ दिये हैं, अच्छी शांति प्रदान करने वाले शब्द क्यों न बोले ? इस जीभ से एसी वाणी क्यों न बोले जिससे पांच व्यक्ति आपको चाहने वाले हो जांय। प्रेम करने वाले हो जांय। आदर करने वाले हो जांय। आदर तथा अनादर में दोनो जीभ पर निर्भर करता हैं मनुष्य के भीतर ये दोनो तत्व

विराजमान हैं । इन्ही से व्यक्ति का व्यक्तित्व सामने आता है ।

स्वामिनारायण भगवान ने माणावदर की सभा में भक्तों को यह प्रेरणादायी अनमोल उपदेश दिया था । तथा अपने जीव को कमजोर करने वालों की पहचान भी करा दिया था । देव, सत्संग शास्त्र, इत्यादि के मनन की उपाय भी बताये । ये सभी जिसके जीवन हों वह अंदर के संग्राम में जीत जाता है । वही परम सुखी होता है । उसके हृदय में महात्मा की तरह खराब दोष प्रवेश कर नहीं सकते ।

•

वरदान नहीं चाहिये

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक महात्माजी थे, वे बड़े पवित्र थें । गुण ग्राही स्वभाव वाले थे । उनकी बुद्धि इतनी निर्मल थी कि देवता भी आश्चर्यमुक्त हो गये थे ।

इसमें ऐसा हुआ कि महात्माजी के पवित्र विचार देखकर स्वर्ग में देवता लोग खूब प्रसन्न हो गये । देवता लोग भगवान को प्रार्थना किये कि हे भगवान ! ये महात्मा कितने पवित्र हैं । महात्माजी को कोई अभिमान नहीं है । महात्माजी बड़े आनंदी स्वभाव के हैं । इन्हें देखते ही आनंद की अनुभूति होती है । शांति मिलती है । हे भगवान ! हमारे पास ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो महात्माजी को दे सकें । लेकिन हम आपको प्रार्थना करते हैं कि ऐसे महात्माजी को आप कुछ दीजिये । भगवानने कहा आप उनके पास जाइये उन्हे जो भी चाहिये देकर आइये ।

देवों ने कहा "हे महात्माजी । आपके स्पर्श से रोगी का रोग मिट जाय ऐसी सिद्धि चाहिये ?

महात्माजी ने कहा यह काम ईश्वर का है ।

देवताओं ने पुनः कहा आप पापियों का उद्धार करने की तथा कुमार्ग पर जाने वालों के सन्मार्ग पर लेजाने की सिद्धि चाहिये ? महात्माजी ने कहा अरे ..... नहीं नहीं मैं लोगों को आकर्षित करुँ तो लोग ईश्वर से विमुख हो जायेंगे, इसलिये हमें कोई सिद्धि नहीं चाहिये ।

देवोने कहा हम आपको कुछ देना चाहते हैं । इसलिये आपको क्या आवश्यक है या आपको क्या चाहिये । महात्माजीने कहा "हे देवो ! मुझे क्या इच्छा हो सकती है ? ईश्वर की कृपा मात्र मेरे ऊपर हो वस ? इसमें सबकुछ क्या नहीं आ जाता ? देवों ने कहा यहाँ आना मेरा निष्फल नही जाना चाहिये । आप नहीं मांगेगे तो भी हम कुछ देकर ही जायेंगे ।

महात्माजीने कहा ठीक है, तो इतना मांगता हूँ कि मेरे हाथ से जो भी उपकार हो उसका मुझे ज्ञान नहीं होना चाहिये । देवो ने तथास्तु कह दिया । बाद में वे महात्माजी जहाँ भी जाते सभी के दुःख दर्द मिट जाते थे ।

उनके दर्शन तथा स्पर्श से सभी के दुख दूर हो जाते और शांति मिलती थी । पापी जीवों का उद्धार हो जाता । भगवान की भजन के लिये सभी को प्रेरित करते । सभी उपकार महात्माजी के हाथ से होता लेकिन उन्हे ख्याल नहीं आता । सभी से यहीं कहते यह सब भगवान की कृपा से हुआ है । इस तरह अनेकों का कल्याण हुआ जिसमें महात्माजी माध्यम हुए ।

ऐसे ही संत अपने व्यापकानंद स्वामी थे । किसी के भी दुःख को देखकर उनका हृदय द्रवित हो जाता था । किसी गाँव में घोड़ी मरगई लोग रो रहे थे । व्यापकानंद स्वामी वहीं थे । उन्हें इसकी खबर मिली, वे उस घोड़ी के पास जाकर किसी अन्यजीव को प्रवेश कराकर जीवित कर दिये । इसी तरह किसी के बेटे की मृत्यु पर उसे भी जीवित किये थे । अन्य भी इसी तरह के बहुत सारे कार्य किये । महाराज यह सुनकर उनसे कहे कि यह ठीक नहीं । तब स्वामी ने कहा मैं नहीं करता हूँ सब आप की कृपा से होता है । इस तरह जो प्रभु की प्रसन्नता मानकर कार्य करता है उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है । संत बड़े हितकारी होते हैं । संत की प्राप्ति होना ही दुर्लभ है । उनकी सेवा मिलना जिन्दगी का अनमोल धन है । ऐसे संत से यह लोक तथा परलोक दोनो सुखी होता है ।



भक्ति सुधा

श्रीजी महाराज का अनंत विश्वरुप दर्शन

- कंचनबहन रणछोड़भाई पटेल (नारायणपुरा)

एक समय पंचाला में झीणाभाई को संकल्प हुआ कि जिस तरह श्री कृष्णने अर्जुन को विश्वरूप दर्शन कराया था । उसी तरह श्रीजी महाराज ने अंतर्यामी शक्ति से कहा कि झीणाभाई ऊपर देखो । झीणाभाई ऊपर देखे तो अनंत राम-कृष्णादिक अवतार, अनंत विराटपुरुष तथा अनंत अक्षरादि मुक्त श्रीजी महाराज की स्तुति करते दिखाई दिये ।

श्रीजी महाराज के अनंत सामर्थ्य, अनंत कोटि ब्रह्मांड, अनंत कोटि रामकृष्णादिक अवतार तथा उनके धाम किसी गिन्ती में नही है । श्रीजी महाराज के एक भृकुटी विलास से अनंत कोटि ब्रह्माडं की उत्पत्ति होती है तथा नाश होता है । इसलिये श्रीजी महाराज की महिमा का पार नहीं है । श्रीजी महाराज ही सर्वकर्ता हर्ता है ऐसा जानकर सर्वोपरि महिमा समझनी चाहिये ।

एक समय झीणाभाई के यहाँ पांच सौ परमहंस तथा अनगिनत हरि भक्तों के साथ श्री सहजानंद स्वामी कीर्तन गाते हुए ताली बजा रहे थे । उसी समय ब्रह्मानंद स्वामीने श्रीहरि को उठाकर अपने पास खड़े रखे, जिससे सभी के मन मे ऐसा संकल्प हुआ कि श्रीजी महाराज इसीतरह हमारे पास भी खड़े होते तो कितना अच्छा होता । इस प्रकार सभी के संकल्प जानकर श्रीजी महाराज ने अनंतरूप धारण किया । सभी के साथ रास क्रीडा किये । इन्द्रादिक देवता भी पुष्पवृष्टि सुगन्धित द्रव्य इत्यादि की वृष्टि के साथ नाना प्रकार के वाद्य यंत्रो श्रीहरि का पूजन अर्चन किये । अक्षरादि मुक्त भी आकर स्तुति कराने लगे ।

इस तरह श्रीजी महाराज अपने भक्तों को अनेकों वार दर्शन दिया है । इसी तरह अभी भी प्रत्यक्ष दर्शन देते रहे हैं । अथवा आचार्य महाराजश्री के रूप में प्रत्यक्ष दर्शन देते रहते हैं ।

श्रीजी महाराज ने बुराहानपुर में गोविंदराम भट्ट को हजार हाथ देकर बड़ा रूप बताया था । इस तरह के दर्शन श्रीजी महाराज ने अनेकों को दर्शन दिया है । श्रीजी महाराज कभी परोक्ष नहीं होते । स्वयं जो धर्मकुल के सच्चे भक्त हैं उनसे अणुमात्र भी दूर नहीं रहते । जो दंभी हैं, पाखंडी है, ढोंगी है उन्हें प्रभु का दर्शन कभी नहीं होता ।

•

गढपुर में लखु कंदोई

- सां.यो. हीराबहन तथा सां.यो. भगवतीबहन (ध्रांगध्रा)

गढपुर में नृसिंहानंद स्वामी बड़े संत हो गये । हरिभक्तों के दुःख को देखकर उसे तुरंत दूर कर देते थे । गढपुर में लखु कंदोई एक हरिभक्त थे । वे प्रतिदिन स्वामी का दर्शन करने जाते थे ।

एक दिन नृसिंहानंद स्वामीने पूछा "तुम्हारा व्यापार कैसा है ?" तब लखुने कहा स्वामी हमारी छोटी सी दुकान है उससे जो मिलता है उसी से व्यवहार चलता है ।

स्वामीने कहा "तुम प्रतिदिन ठाकुरजी के लिये एकपाव पेंडा अथवा गांठिया ले आना । लखु कंदोई बहुत प्रसन्न हो गया । उन्होंने विचार किया स्वामी किसी से नही कहे केवल मुझसे ही कहे हैं । इससे भगवान तथा स्वामीजी दोनो मेरे ऊपर प्रसन्न हैं । अब वे प्रतिदिन पेड़ा और गठिया लेक र दर्शन करने आते ।

स्वामीजी प्रतिदिन भोग लगाकर भक्तों में प्रसाद वितरित कर देते । एक दिन स्वामीजी का शिष्य विरोध करते हुए कहा कि गुरु? आप स्वयं प्रसाद नहीं खाते दूसरों में बाट देते हैं । तो प्रतिदिन क्यों मगवाते हैं । यह लखु भगत बहुत गरीब है । परंतु आपकी महिमा समझ कर लाता है । तब नृसिंहानंद स्वामीने शिष्य से कहा लखु को गरीब नहीं करना है उसे धनवान बनाना है । उसका अन्न संत खायेंगे तो भगवान तथा लक्ष्मीजी प्रसन्न होंगें और घर में लक्ष्मी का वास होगा ।

ऐसी वात सुनकर शिष्य बहुत प्रसन्न हो गया। थोड़े समय के बाद लखु कंदोई श्रीजी महाराज की कृपा तथा नृसिंहानंद स्वामी के आशीर्वाद से खूब सुखी हो गये।

•

संत समागम

- जयश्री सुरेश झिंझुवाडीया (धांगध्रा)

मुमुक्षुजनों को ऐसे लक्षण वाले संतो के साथ सत्संग करने से धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति जीवन मे आती है। ऐसे संत के साथ समागम करने से प्रभु की महिमा समझ में आती है। पृथ्वी में तीर्थो का माहात्म्य ज्ञान संतो से ही मीलता है। इसलिए धर्मकुल आश्रित संतो का समागम अवश्य करना चाहिये।

आपके भीतर मनस्म दोष हो तो उसका त्याग कर संतो की शरण ग्रहण करके उनके मुख से परमात्मा की लीला का पान करे।

परंतु ऐसी ईच्छा नहीं रखनी चाहिये कि मैं मंदिर में जाऊँ तो संत हार पहनाये, प्रशंसा करें, प्रसाद दें, इत्यादि परंतु मात्र परमात्मा की महिमा समझने के लिये उनकी शरण में जाना चाहिये। संसार सागर से कैसे मुक्त हो सकें उनकी उपाय समझनी चाहिये।

संतो के सत्संग से जन्म मरण का दुःख ढलजाता है, तथा सभी पाप जलजाते हैं। इसके साथ ही परमात्मा का अविनाशी धाम मिलता है। संसार का सभी कार्य परमात्मा पूर्ण करते हैं। इसलिये परमात्मा कहते हैं कि हे मुमुक्षुजन ! संतो का सत्संग करके मनुष्य जन्म सार्तक करने में ही सच्चा लाभ है।

यदि आप को परमात्मा के धाम प्राप्ति की इच्छा हो तो अपने धर्मगुरु आचार्य महाराजश्री का दर्शन आशीर्वाद तथा संतो के साथ सत्संग करें। यही सभी शास्त्रों का सिद्धान्त है। इसलिये कि संत प्राणीमात्र का हित करने वाले होते है। मोक्ष का यथार्थ मार्ग बताने वाले तथा परमात्मा का साक्षात्कार करने वाले संत ही है। उन्हें अपना कोई स्वार्थ नहीं होता। संत यमलोक स्त्री कसाईखाने में जाने वाले जीवों को ज्ञान स्त्रीधन देकर मोक्षमार्ग बताते हैं। लेकिन वे कौन संत जो धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की आज्ञा में रहते हों उन्हीं से कल्याण निश्चित है।

हे भक्तों ! स्वयं स्वामिनारायण भगवानने वचनामृत ८ वें में कहे है कि साधु के संग से अहंबुद्धि नष्ट हो जाती है, देह का संबंध खत्म हो जाता है। बुद्धि निर्मल होकर भगवद्धाम की प्राप्ति होती है। (ग.म.व. ८)

पृष्ठ १० का चालूं ...

कपटीने कपट किया - ब्रह्माभाव की वाणी

अमने पूछवुं होय जेह, शिक्षापत्री ने पूछजो जेह।
शिक्षापत्री अमे रचि सारी,
ए तो जाणवी मूर्ति अमारी।
ए थकी उलटा वर्तनारा, संप्रदायी नहीं ते अमारा।
तेनुं कल्याण पण नहीं थाय,
एम जाणजो सौ मनमांय॥

इसलिये गुरुआज्ञा सर्वोपरि धर्म है। ऐसा समझकर स्वामी श्रीहरि को दंडवत प्रणाम करके जूनागढ के लिये प्रस्थान किये। लेकिन गढड़ा से निकलते समय नाना विधि अपशगुन होने लगे।

"गढडाना सीमाडे हरण डाबे उतर्या, जाण्युं शुकन अशुभ छे ने दोह से बोल्या।
हरण एज सुखनां हरण, हरण बुद्धिबल हरण।
हरण तेज हिमत हरण, हरण प्रान तन हरण॥

बाद में ब्रह्म मुनि गढडा में अक्षर कक्ष में श्रीहरि का दर्शन करने आते है उस समय श्रीहरि प्रत्यक्ष होकर ब्रह्म मुनि को गुलाब का हार पहनाते हुए कहे कि "ब्रह्म मुनि दिलगीर थाव मां, हूँ सदाय तमारा भेळो छुं"। प्रभु का ब्रह्ममुनि के साथ कितना अलौकिक प्रेम था। गुरु शिष्य का कितना अहो भाव था। इस दर्शन का अलौकिक लाभ ज्येष्ठ शुक्ल १० मी के दिन "श्री गोपीनाथ महाराजकी मूर्ति के सामने खड़े होकर "प्राण स्नेही घर आवो अब पियारा" इस कीर्तन को गाकर ब्रह्मानंद स्वामी ब्रह्मरस में डूब गये। इसी तरह हमारा भी जीवन हो तो प्रभु की प्रसन्नता अवश्य मिलेगी।

"ग्राम्य वात न कोई उच्चरे, हरि लीला नी वातज करे
एवुं जोईने भासे एकाम (मंदिर) जाणे अही छे
अक्षरधाम"

प्रश्न पेटी

• साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ शिक्षापत्री में वैष्णवों के राजा का श्रीजी महाराजने किस श्लोक में उल्लेख किया है ?

प्रश्न : २ वि.स. १८०० सौ के प्रारंभ में बुंदेलखंड में दतिया गाँव में निवास करते हुए विष्णुशर्मा तथा पत्नी बिरजादेवी को दो बालक थे । उस में से एक पुत्र श्रीजी महाराज से दीक्षा लेकर साधु हो गया । इन दोनो पुत्रों का क्या नाम था । जिस में भगवा वस्त्र धारण किया, उसका प्रथम मिलन किससे हुआ ? उसके बाद उनका क्या नाम रखा गया ?

प्रश्न : ३ स्वामिनारायण भगवानने किस शास्त्र के किस प्रकरण में तथा किस अध्याय में कहा है कि "सर्वेषां नीतिशास्त्रणां सारो वैदुरि को नयः" ?

प्रश्न : ४ "जिस संत का बडाप्पन जाना गया हो वह संत चाहे कितना भी तिरस्कार करे तो भी वह धोखा नहीं देगा" । वह जितना लेगा उतना अपना अवगुण लेगा लेकिन संत का अवगुण कभी नहीं लेगा । इसलिये जिसे भगवान का या संत का माहात्म्य समझमें आगया है उसी का मूल इस संप्रदाय में अचल रहेगा । जिसे माहात्म्य समझ में नहीं आया उसका कोई विश्वास नहीं । यह किस वनचनामृत का सार है ?

प्रश्न : ५ "आओ ने रहिए आज, जगतना जनजीवन....." इस पद के रचयिता का नाम बताइये ?

प्रश्न : ६ मनु का तीसरा पुत्र शर्यांति, उनके पुत्र कापुत्र कौन जो समुद्र में कुशस्थली बनाकर वहीं राज्य करता था । उस पुत्र को १०० पुत्र थे । उस में सबसे बडा कौन ? जो अपनी पुत्री का विवाह बलदेवजी के साथ किया था ?

प्रश्न : ७ "जीव जेम स्वभाव छोड़तो नही तेम भगावन पण फोताना पोताना स्वभाव छोड़ता नथी" यह उक्ति किसने कही है ?

अगस्त २००८ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) अपनी सेवा के लिये पूज्य आचार्यश्री की जिस समय से प्रतिष्ठा हो गई हो उन्हीं की सेवा एवं पूजा करनी चाहिये । (शि.प. श्लो. ६२) (२) ६३ वें श्लोक में श्रीहरि कहते हैं कि "हमारे जो सत्संगी वे नित्य प्रति मंदिर में जांय तथा उस मंदिर में श्री राधिका पति ऐसे श्रीकृष्ण भगवान का उच्च स्वर से कीर्तन करें । (३) स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी (४) भागवत शास्त्र के दशम स्कंन्ध के ५७ वें अध्याय में "सत्राजित के पास मणी थी" यह प्रसंग आता हैं । (५) १. भूतयज्ञ, २. पितृयज्ञ, ३. देवयज्ञ, ४. मनुष्ययज्ञ, ५. ब्रह्मयज्ञ । (६) स्वामी के पास आकर कहने लगे कि, मुक्तानंद स्वामी अकेले बैठकर खाते है तथा बैठकर केवल बात करते हैं । स्वाद छोडने की बात तो अच्छी करते हैं । (७) कालमाया, पापकर्म यमदूत भयादहम । श्रीकृष्ण देवं शरणं प्रपन्नोऽस्मि स पातु माम ॥

१. सां.यो. शिल्पाबा - सुरेन्द्रनगर
२. सां.यो. शीतलबा - सुरेन्द्रनगर
३. कंचनबहन बाबुभाई - रतनपर
४. विष्णुभाई जीवाभाई पटेल - सीतापुर
५. हरगोविंदभाई चतुर्भुजदास पटेल - मोटप
६. माधवजीभाई हरजीवभाई आद्रोज -मोटप
७. रेखाबहन कीर्तिकुमार पटेल - ऊझा
८. डाभी मफाजी सरदारजी - डांगरवा
९. गोरधनभाई शंकरदास पटेल - सोजा
१०. भावनाबहन कमलेशकुमार - मोरबी
११. प्रफुलाबहन एस. पटेल - उवारसद
१२. रामभाई अंबालाल पटेल - वेडा
१३. अमृतलाल क. मोदी - सोजा
१४. शारदाबहन कांतिभाई पटेल - नांदोल
१५. कैलाशबहन विष्णुभाई पटेल - नांदोल
१६. सोनी दासाबहन घनश्यामभाई - अमदाबाद
१७. विठ्ठलपरा अमरशी वशरामभाई - नवसारी
१८. गंगाबहन भक्तिभाई पटेल - झुलासण
१९. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल - राणीप
२०. ज्योत्सनाबहन राजूभाई पटेल - आणंदपुरा
२१. कौशिका काचा - जीरागढ
२२. चंद्रिकाबहन एस. टांक - जीरागढ
२३. मनाणी पुष्पा - जीरागढ
२४. अरविंदाबहन एन. भावसार - चांदलोडीया
२५. सुमित्राबहन नरेशकुमार भावसार - विसनगर
२६. वीणाबहन आर. भावसार - नवरंगपुरा
२७. सां.यो. भारतीबा - स्वा.मं. हवेली अहमदाबाद
२८. सां.यो. मंजुबा - स्वा.मं. हवेली अहमदाबाद
२९. हसुबहन के. ठक्कर - इसनपुर
३०. साकरबहन नटवरभाई - नांदोल
३१. शिल्पाबहन मणीलाल पटेल - दहेगाम
३२. माणेकबहन मणीलाल पटेल - दहेगाम
३३. सां.यो. बहने - मीरजापर - कच्छ
३४. देवीबहन हीरालाल दबासीया - कच्छ
३५. कटारिया देवाभाई वालाभाई - टींबा
३६. पटेल हंसाबहन ईश्वरभाई - सापावाडा

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में फूलदोलोत्सव तथा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से संपन्न

पवित्र श्रावण मास में कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से पवित्र श्रावण मास में सर्वावतारी श्रीनरनारायणदेव आदि देवों के समक्ष दोलोत्सव का सुन्दर कलात्मक थर्मोकोल की डिझाईन करके तीनों मंदिर को सजाया गया था। सोना-चांदी का अद्‌भुत कलाकारी वाले भव्य हिंडोले को विविध फूलों से सजाया गया था। इसके अलांवा पंचमेवा था चाकलेट का दोलोत्सव बनाकर उसमें ठाकुरजी को बैठाकर आषाढ कृष्ण-२ से श्रावण कृष्ण-२ तक हजारों हरिभक्त झूलते हुए प्रभु का दर्शन करके भाग्यशाली बने थे। झूले की अद्‌भुत सेवा महंत स्वामी की प्रेरणा से कोठारी रामानुज स्वामी, वी.पी. स्वामी, विष्णु स्वामी, कोठार के स्टाफ तथा संत-पार्षद मंडल खूब श्रद्धा-भक्ति से सेवा करके ठाकुरजी तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की प्रसन्नता प्राप्त की थी। सर्वानुरागी हरिभक्तों ने यह सेवा का अवसर प्राप्त करके अपने जीवन को धन्य बनाया था।

श्रावण कृष्ण-८ अष्टमी (कृष्णजन्मी) के शुभ दि प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में रात्रि ८ से १२-०० बजे तक कीर्तन भक्ति का संगीतमय कार्यक्रम का सुंदर आयोजन किया गया था। जिस में को. रामानुज स्वामी तथा धर्मकिशोरस्वामी की प्रेरणा से सुप्रसिद्ध कीर्तनकार श्री जयेश सोनी तथा सहायक श्री धवल सोनीने गीतों का तालबद्ध आयोजन किया था। रात्रि १२-०० बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की आरती प.पू. बड़े महाराजश्रीने उतारी थी। दर्शन के लिये हजारो संत-हरिभक्त उपस्थित थे। सभी दर्शन का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया था। *- शा. धर्मकिशोरदास*

अहमदाबाद (कालुपुर) मंदिर में बाल सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर में प्रति रविवार को प्रातः ८-१५ से ९-३० तक बाल सभा चलती रहती है। इसमें सत्संगी हरिभक्त अपने बालकों के अच्छे संस्कार के लिये तथा सत्संग की दृढता के लिये इस सत्संग सभा में अवश्य भेंजे। इस सभा का आयोजन मात्र इन्ही बच्चों के लिये किया जाता है। इस बाल सभा का सभी बालक लाभ ले इसके लिये सत्संगी लोग अपने बालको को सत्संग का लाभ प्राप्त करावें. ऐसा हमारा आग्रह है।- *को.स्वा. तथा संचालकश्री*

अहमदाबाद मंदिर द्वारा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से को.शा.स्वा. धर्मकिशोरदास, भक्ति स्वामी, हरिजीवन स्वामी तथा बलदेव स्वामी आदि संत मंडल जनतानगर, जीवराजपार्क, मेघाड़ीनगर, नारायणपुरा, घाटलोडीया तथा नवावाडज मंदिर में हरिभक्तों को सर्वोपरि श्रीहरि की महिमा तथा धर्मकुल धर्मवंशी का माहात्म्य कथा में वर्णन किया। अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण मास में प्रातः शिक्षापत्री भाष्य सायंकाल श्रीमद् भागवत दशम स्कंध कथा शा. स्वा. रामानुजदास तथा धर्मकिशोरदासने की थी। कथा का दिव्यलाभ प्रातः एवं सायं हरिभक्तोंने खूब लिया था।

अहमदाबाद मंदिर में श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी एवं रामानुज स्वामी की प्रेरणा से अ.नि. शैलेन्द्रसिंह पोपटसिंह वाघेला के स्मरणार्थ उनके परिवार की तरफ से श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण ता. २५-८-०८ से ता. ३१-८-०८ तक शा.स्वामी धर्मकिशोरदासजीके वक्तापद पर हुआ था। संत हरिभक्त कथा का दिव्य लाभ लेकर धन्य हो गये थे। *- भीखाभाई*

मेमनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमनगर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण मास में ता. २-८-०८ से ता. ८-८-०८ तक श्रीमद् सत्संगीजीवन (प्र.-२) का रात्रि पारायण शा. धर्मवल्लभदास (बोपल मंदिर) के संत मंडल की थी।

प्रति मास के प्रथम तथा तृतीय शनिवार रात्रि ८-३० से १०-३० तक सभा का आयोजन किया जाता है। जिस में बोपल मंदिर के संत कथा का लाभ देते हैं। जिस में मेमनगर-वस्त्रापुर थलतेज तथा सोला विस्तार के हरिभक्तों को लाभ लेने के लिये सार्वजनिक आमंत्रण है। - *श्री स्वा. सत्संग समाज, मेमनगर*

हर्षद कोलोनी (बापुनगर) मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा हरिभक्तों के सहकार से पवित्र श्रावण मास में ता. ४-८-०८ के दिन समूह महापूजा का आयोजन किया गया था, जिसमें महापूजा विधि श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय जेतलपुर के प्रधानाचार्य डॉ. वाचस्पति मिश्र ने कराई थी। पूज्य शा. स्वामी हरिकेशवदासजी महापूजा की पूर्णाहुति कराकर आशीर्वाद दिये थे। जिस में करीब १५० भक्त लाभ लिये थे। इस प्रसंग में श्री दासभाई मंदिर के पूजारी वगैरह प्रेरणा स्रु बने थे।

- गोरधनभाई सीतापरा

कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में पवित्र श्रावण मास में ठाकुरजी को नये-नये प्रकार के झूलों में बैठाकर झुलाया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने इस प्रसंग पर पदार्पण करके ठाकुरजी को झुलाकर उत्सवीय मंडल को आशीर्वाद दिया था। श्रीमद् भागवत कथा शा. यज्ञप्रकाशदास सम्पूर्णमास किये थे। हरिभक्त झूले का दर्शन करके तथा कथा श्रवण करके धन्य हो गये। श्रावण मास में महारुद्र यज्ञ की पूर्णाहुति के प्रसंग पर श्री सिद्धेश्वर महादेव का अभिषेक तथा आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हुई थी। प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री ने शिव महिमा तथा अपने संप्रदाय की परंपरा के विषय में बड़े सुन्दर ढंग से समझाया था। महंत स्वामी तथा आनंद स्वामी की प्रेरणा से शा. यज्ञप्रकाशदासने सभा संचालन किया था। *- नरोत्तम भगत*

जेतलपुर मंदिर में श्रावण मास में कथा

पवित्र श्रावण मास में जेतलपुर धाम में श्रीहरि के आज्ञानुसार श्रीमद् भागवत दशम स्कंध तथा पंचम स्कंध की कथा शा. भक्तिनन्दनदासजी के वक्तापद पर हुई थी। जिसका लाभ जेतलपुर के अगल बगल के गाँव वालो ने लिया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ प्रति रविवार

को सत्संग सभा चलती है। जिस में भक्तिनंदन स्वामी कथा वार्ता का लाभ सभी को देते हैं। पू. पी.पी. स्वामी तथा महंत स्वमी आत्मप्रकाशदासजी ऐसी सत्संग की प्रवृत्ति में सहयोग देकर उत्साहित करते रहते हैं। हरिभक्त भी प्रति रविवार को बड़ी संख्या में ऐसा लाभ लेकर धन्य हो रहे हैं।

जेतलपुर धाम में श्री रेवती बलदेवजी महाराज के सांनिध्य में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था। नवमी के दिन नंद महोत्सव भव्यता से मनाया गया था। हरिभक्त दर्शन करके जीवन को धन्य बनाया। *- महंत के.पी. स्वामी*

श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव (ता. ५-२-०९ से ता. ११-२-०९)

श्री नरनारायणदेव देशका निर्माण हो रहा शिखरी मंदिर श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा जिस भूमि पर स्वयं श्रीजी महाराज कुशली बाई के घर पधारकर मनोरथ पूर्ण किये थे। जहाँ पर खिचड़ी को दातून कराकर अद्‌भुत लीला की थी।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पूज्य पी.पी. स्वामी तथा स.गु. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से यहाँ तीन शिखर का महामंदिर का कार्य पूर्ण होने से ता. ५-२-०९ से ता. ११-२-०९ तक मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न होगा। प्रति रविवार को मंदिर में सभा होती है। जिस में श्रीजी महाराज की लीला तथा धर्मकुल का माहात्म्य दृष्टांत के साथ विद्वान संत पू.पी.पी. स्वामी पू. आत्मप्रकाश स्वामी, शा. हरिॐ स्वामी, पू. उत्तम स्वामी इत्यादि संत यदा कदा हरिभक्तों को दिव्य लाभ देते रहते हैं। जिस में हजारों भक्त लाभ लेते हैं।

वर्तमान में मंदिर के निर्माण कार्य पूरेजोश में चल रहा है। उत्तर गुजरात के हरिभक्त बड़ी संख्या में सेवा करने आते हैं।

- महंत स्वामी नारायणस्वरूपदास

ट्रेन्ट गाँव में जन्माष्टमी का उत्सव मनाया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ट्रेन्ट श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रावण कृष्ण पक्ष-८ श्री कृष्ण जन्मोत्सव का सुंदर आयोजन किया गया था। इस प्रसंग पर जेतलपुर से पू.पी.पी. स्वामी तथा शा. भक्तिवल्लभदासजी (अमेरिकावाले) विषेश रूप से पधारे थे। इस सभा में हरिभक्तोने नंद संतो के कीर्तन का गान करके रास किया था। पू. पी.पी. स्वामी तथा शा. भक्ति स्वामीने अपनी अमृतवाणी से भगवान का माहात्म्य तथा धर्मकुल माहात्म्य की सुंदर बातें बताई थी। रात्रि में १२-०० बजे पू. पी.पी. स्वामी ने जन्मोत्सव की आरती उतारकर महाअलौकिक लाभ दिया था। हरिभक्तोंने दर्शन करके इस दिव्य अवसर का लाभ प्राप्त किया था। *- महंत के.पी. स्वामी*

उवारसद श्री स्वामिनारायण मंदिर

श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री ईश्वरभाई मगनभाई पटेल तथा उनके पुत्र श्री शैलेषभाई तथा श्री बिपीनभाई के यहाँ ता. १९-८-०८ के दिन सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। जिस में अहमदाबाद, कालुपुर, नारायणघाट, जमीयतपुरा, कलोल, आदराज, उनावा आदि धामों से संतोने पधारकर कथा वार्ताका लाभ दिया था। गाँव के हरिभक्तोंने श्रीजी महाराज तथा धर्मकुल के महिमा की बातें की थी।

संतोने ठाकुरजी का भोग लगाकर आरती करके ठाकुरजी को प्रसाद खिलाया था। *- कोठारीश्री, उवारसद*

बालासिनोर मंदिर में चातुर्मास में कथा-पारायण

बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से पवित्र श्रावण महीने में ता. २-८-०८ से ता. ८-८-०८ तक शा. बिश्वस्वरूपदास (कालुपुर स्वा. मंदिर) के वक्तापद पर जनमंगल सप्ताह पारायण बालासिनोर सत्संग समाज की तरफ से संपन्न हुई थी।

पुर्णाहुति के प्रसंग पर वक्ता संत तथा सहपाठी संत स्वामी धर्मकिशोरदास का कोठारीश्रीने शाल ओढाकर सन्मान किया था। हर यजमानों को संतो द्वारा ठाकुरजी की तस्वीर भेट स्वरूप प्रदान की गई। आभार विधि श्री मधुकरभाई त्रिवेदीने की थी॥

- रमेश भगत तथा घनश्यामभाई

नांदोल मंदिर

नांदोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी समक्ष हरिभक्तों की सेवा सहकार से तथा कोठारीश्री की प्रेरणा से पवित्र श्रावण महीने में भिन्न प्रकार के झूलोत्सव बनाकर ठाकुरजी को झुलाया गया था। दोपहर २-३० से श्रीमद् सत्संगिभूषण की कथा की गयी थी। हरिभक्तोंने दर्शन करके कथा-वार्ता का लाभ लिया था। *- कोठारी विष्णुभाई*

नरोडा आदिश्वरनगर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रावण महिने में ता. २०-७-०८ से ता. १८-८-०८ तक देदीप्यमान झूलोत्सव में ठाकुरजी को झुलाया था। शाम को भागवत कथा का पान पूजारी श्री रसिकभाई खरसाणी ने करवाया था। जन्माष्टमी को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने धूमधाम से मनाया था। कक्षा १० तथा १२ में उत्तम गुण से उत्तीर्ण हुए विद्यार्थिओं को श्री हितेशभाई शाह की तरफ से इनाम प्रदान किया गया था।

- भगवानभाई पटेल

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

सुरेन्द्रनगर मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञानुसार तथा महंत स्वामी की प्रेरणा से आषाढ कृष्ण-२ से श्रावण कृष्ण-२ तक ठाकुरजी के समक्ष विविध प्रकारसे नूतन झूले पर अंतिम सात दिन तक ठाकुरजी को झुलाया गया था। समग्र आयोजन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने किया था। *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

लींबडी तपोवन मंदिर

मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से चार्तुमास में एक महिने तक कथा-पारायण तथा सुंदर झूलोत्सव का आयोजन किया था। महंत स्वामीने कथामृत का पान करवाया था।

- वंदनप्रकाशदास

श्री स्वामिनारायण मंदिर, चराडवा

चराडवा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शास्त्री हरिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से संत-पार्षद मंडल तथा चराडवा गाँव के हरिभक्तों तथा युवक मंडल ने श्रावण महिने में ठाकुरजी के समक्ष सूका मेवा, चोकलेट, नोट आदि के भिन्न-झूलोत्सव करके भगवान को झुलाया था। हिमालय दर्शन का अद्‌भुत दृश्य निर्मित किया गया था। ता. ६-८-०८ से ता. १२-८-०८ तक श्रीमद् भागवत दशम स्कंध की कथा स.गु. पुराणी स्वामी तथा जगतविहारीदासजी के वक्तापद पर हुई थी। चराडवा के भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोंने कथा का दिव्य लाभ दिया था। *- कोठारी स्वामी*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

श्री स्वामिनारायण मंदिर चेरिहील (अमेरिका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराश्री की आज्ञा से ता. १४-७-०८ आषाढ शुक्ल-११ के पवित्र दिन शा. विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से १२ घंटे की महामंत्र धुन का आयोजन किया गया था। जिस में बड़ी संख्या में भाई-बहन उपस्थित थे। धुन की पूर्णाहुति करके आरती की गई थी। बाद में संतो ने श्रीहरि की कथा की एवं एकादशी का माहात्म्य समझाया था। इस प्रसंग पर साधु अभिषेकप्रसाददासने सुंदर व्यवस्था की थी। ज्यारे आ्युं धर्मनुं कुल रे, त्यारे जामीयुं सत्संगनुं मूल रे॥ अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर चेरीहिल (साथडजर्सी) I.S.S.O. में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर महोत्सव मनाया गया था, जिस में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से मंदिर में विराजमान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज जब से यहां प्रतिष्ठित हुए उस समय से सत्संग में उत्तरोत्तर वृद्धि होती रही है। यहाँ गुरुपूर्णिमा महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया था। दिव्य सभा में धर्मगुरुप.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की तस्वीर का पूजन अर्चन करके आरती की गई थी। शा. विश्वप्रकाशदासजी (वडनगर महंत) ने धर्मवंश की महिमा शास्त्र प्रमाण के साथ समझाया था। और पूज्य महाराजश्री की आज्ञा में रहने की गुजारिश की। अंत में ठाकुरजी की आरती के साथ प्रसाद लेकर कार्यक्रम पूर्ण हुआ था।

- कार्तिकभाई पटेल

लेक्लेन्ड फ्लोरिडा श्री स्वामिनारायण मंदिर

यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का तीसरा वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से धूमधाम के साथ संपन्न हुआ था।

ता. २५ से २७ जुलाई -८ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ सांनिध्य में श्रीमद् भागवत दशम स्कंध की त्रिदिनात्मक पारायण शा.स्वा. छप्पैयाप्रसाददासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुआ। जिसके यजमान श्री विजयभाई विठ्ठलभाई दलसुखभाई पटेल (करजीसणवाला) परिवार था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का षोडशोपचार के साथ महाभिषेक किया गया था। इसके बाद कथा के पूर्णाहुति की आरती हुई थी। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर सभी ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती की थी। इस अवसर पर करीब ५०० जितने हरिभक्त उपस्थित थे। इसके बाद संत हरिभक्तों ने धर्मवंशी आचार्य तथा गुरुकी महिमा पर प्रकाश डाला था। शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी ने तथा पुजारी स्वामी विवेकप्रसाददासने सुन्दर व्यवस्था की थी। अंत में पूज्य आचार्य महाराजश्री ने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

- नलिनभाई के. पटेल

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर (अमेरिका)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में गुरुपूर्णिमा महोत्सव भव्य ढंग से मनाया गया था।

प्रासंगिक सभा में धर्मगुरुप.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की तस्वीर का पूजन-अर्चन तथा आरती सर्व प्रथम महंत स्वामी तथा हरिभक्तों ने की थी। महंत स्वामी ज्ञानजीवनदासने गुरुपूर्णिमा का माहात्म्य दृष्टांत के साथ समझाया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अपने धर्मगुरुहैं इन्हीं की आज्ञा में रहकर सर्वश्रेय प्राप्त किया जा सकता है। बहनों की गुरुपूज्या गादीवाला हैं, बहने उनकी पूजा अर्चना करें एवं उनकी आज्ञा में रहें। महाराजने विचार कर यह उत्तम कार्य किया है। सभी स्त्री पुरुष को इन्हीं से मंत्र दीक्षा लेनी चाहिये। इस तरह धर्मकुल उदात्तभाव तथा माहात्म्य को समझाया गया था। अंत में जनमंगल का पाठ, आरती की गई थी। आज बहुत सारे भक्त उपेनभाई शाह के घर से चलकर प्रातः ८-०० बजे की आरती में उपस्थित हो गये थे। आज से प्रति पूनम को पदयात्रा का आयोजन किया जायेगा। ५ कि.मी. की पदयात्रा हैं) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा बड़े महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है।- *प्रवीणभाई शाह*

वोशिंगटन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

२० जुलाई रविवार सायंकाल ३-१५ से रात्रि २-१५ तक ५ घंटे तक कम्युनिटी होल में सत्संग सभा की गई थी। प्रारंभ में श्री स्वामिनारायण धून के बाद "आज मारे ओरडे" पद से सभा का आरंभ किया गया था। संत भक्तों ने कीर्तन मय वातावरण बना दिया था। बाद में १ घन्टे तक गुरुपूर्णिमा के अवसर पर गुरुपूर्णिमा का माहात्म्य ज्ञानप्रकाशजीने समझाया था। अंत में श्रीहरि के साक्षात् अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की चित्र प्रतिमा का पूजन-अर्चन-आरती की गई थी

सभा में २७३ वचनामृत का पाठ, आरती-भोग लगाया गया था। सितम्बर से एक सभा का आयोजन वर्जनीया चेप्टर होल में किया जायेगा। अर्थात् एक सभा मेरीलेन्ड एक सभा वर्जनीया में होगी। सभा के अंत में (I.S.S.O.) का प्रत्येक समाचार दिया जाता है। इस के साथ श्री श्री नरनारायण युवक मंडल की अलग सभा भी की जाती है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से यहाँ का सत्संग फूलाफला है। *- कनुभाई पटेल*

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

अमराई वाडी - अहमदाबाद : श्रीमती पुष्पाबहन डाह्याभाई मोदी (विसनगर) ता. १८-८-०८ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है।

कनीपुर : श्री नटुभाई त्रिकमभाई के पौत्र श्री मौलिक महेन्द्रभाई पटेल ता. ७-८-०८ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

नरोडा (मूल-मालपुर) : अपने अनन्य निष्ठावाले श्री गजेन्द्रसिंह मूलसिंह राठोड (पुलिस दरबार) की धर्म पत्नी अ.सौ. ताराबहन ता. २३-८-०८ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासीनी हुई है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।













१. शिकागो मंदिर में द्विशाब्दी महोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक श्रीहरि के ७वें वंशज के वरद् हाथों से सम्पन्न ।

२. केनेडा टोरन्टो शहर में आई.एस.एस.ओ. संस्थापित नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के बाद अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

३. शिकागो राजमार्ग पर शोभायात्रा में दर्शन देते हुए प.प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ संत समुदाय ।

४. केनेडा टोरन्टो मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में कथामृत पान कराते हुए वक्ता संत पूज्य पी.पी. स्वामी ।

५. मिडवेस्ट शिकागो शिखरी मंदिर की तस्वीर ।

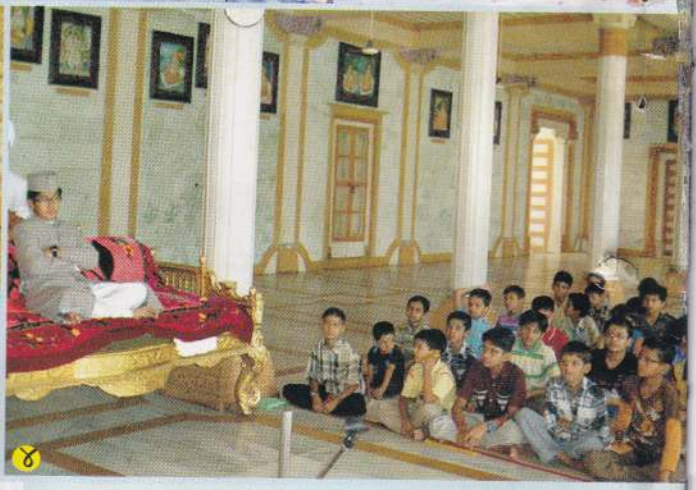
६. केनेडा मंदिर में आयोजित महापूजा में लाभ लेते हुए हरिभक्त ।

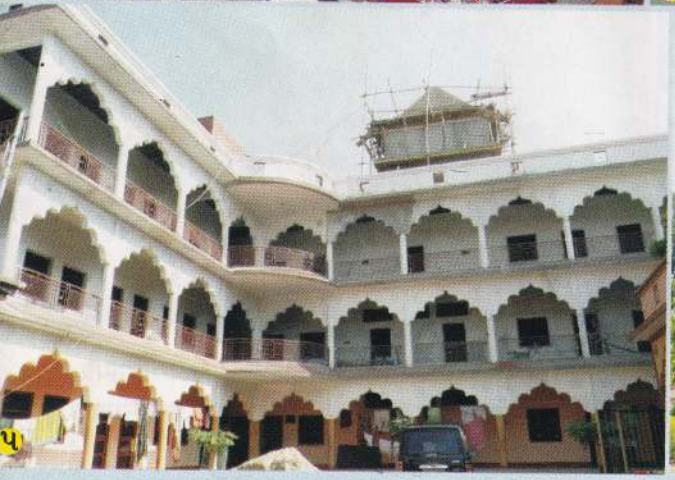
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08


१


२


३


४


५


६

१. जयपुर मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर श्रीहरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।
२. जयपुर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार ।
३. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के समक्ष ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।
४. अहमदाबाद मंदिर में बाल सभा में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।